समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• अगस्त २०१२ • वर्ष ६३ • अंक ८
मूल्य : ₹.१० प्रति, वार्षिक ₹.१००

इस अंक में -

- ★ राजनीति के चक्रव्यूह में फंसा आर्थिक विकास
- ★ मारवाड़ी समाज की राजनीति में सक्रिय भूमिका समय की मांग
- ★ अखिल भारतीय समिति की बैठक : २३ सितम्बर २०१२
- ★ श्रीकृष्ण का विराट स्वरूप

SR RUNGTA GROUP

Caring for Land and People...

RUNGTA MINES LIMITED

Mine Owners, Ferro Alloy Producer & Mineral Processors

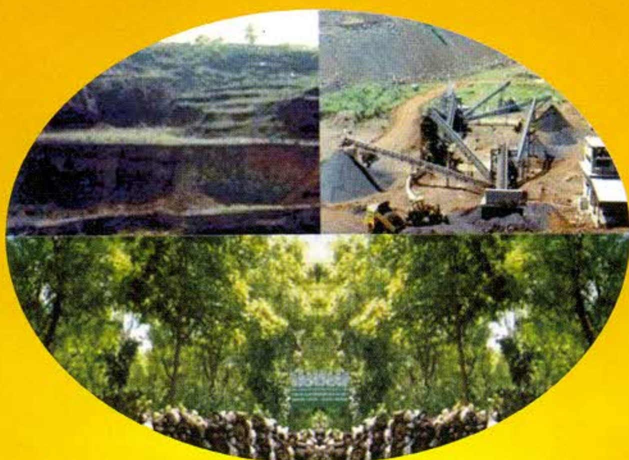

- *IRON ORE - BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- *MANGANESE ORE - BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- *LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE*
- *SPONGE IRON LUMPS & FINES*

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA 833 201, JHARKHAND, INDIA

Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91- 6582 256442

Email: rungtas@satyam.net.in, Web Site: www.rungtamines.com, GRAM: "RUNGTA"

REGISTERED OFFICE

8A, EXPRESS TOWER, 42A, SHAKESPEARE SARANI

KOLKATA 700017, INDIA

Phone: 033-2281 6580/3751; Fax: 91-33-2281 5380; Email: rungta_cal@sify.com

MINES DIVISION

RUNGTA OFFICE

MAIN ROAD, BARBIL 758035, DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA

Phone: 06767- 275221/277481/ 441; Fax: 91-6767-276161

Email: rungta_bbl@yahoo.co.in, GRAM: "RUNGTA"

SPONGE IRON DIVISION

ORISSA

RUNGTA OFFICE

MAIN ROAD, BARBIL 758035

DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA

Phone: 06767- 27689/277391/021

Fax: 91-6767-277011

JHARKHAND

RUNGTA OFFICE

SADAR BAZAR, CHAIBASA - 833201

DIST- SINGHBHUM(W), JHARKHAND, INDIA

Phone: 06582-256621/256321

Fax: 91-6582-257521

समाज विकास

◆ अगस्त २०१२ ◆ वर्ष ६३ ◆ अंक ८ ◆ एक प्रति - १० रु. ◆ वार्षिक-१०० रु.

अनुक्रमणिका

क्रमांक	पृष्ठ संख्या
चिट्ठी आई है	४
सभा / बैठक की सूचनाएँ	५
सम्पादकीय : राजनीति के चक्रव्यूह में फँसा आर्थिक विकास – ***सीताराम शर्मा***	७
अध्यक्षीय : संगठन - सुधार – ***हरिप्रसाद कानोड़िया***	८-९
विचार – दसांश – ***गौरीशंकर गुप्ता***	९
नारी-शिक्षा और शिक्षण में महिलाओं का योगदान – ***संतोष सराफ***	१०
Free Scholarship	११
लेख – ***हरिप्रसाद कानोड़िया***	१२
पदाधिकारी सूची	१३
केन्द्रीय समाचार	१५
श्रीकृष्ण का विराट स्वरूप – ***श्यामसुन्दर बगड़िया***	१६-१८
गजल – ***मनु महरबान***	१८
प्रान्तीय समाचार	१९-२५
लघु कहानी – एकता की बलिहारी – ***रामचरण यादव***	२५
गजलें	२७
SMS की दुनिया	२९
लघु कहानी – काश मेरी भी एक बेटी होती! – ***शुक्ला चौधरी***	२९
आजादी के लुटेरे कौन? – ***सत्यनारायण मिश्र***	३०

स्वत्वावधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ◆ १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता - ७००००७
फोन : ०३३-२२६८ ०३१९ ◆ email: aimf1935@gmail.com
के लिये श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा
सीडीसी प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित

प्रधान संपादक : सीताराम शर्मा

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आई है

विलंब से मई का अंक १६.६.१२ को प्राप्त हुआ। श्रद्धेय संतोष सराफ के विचार 'नारी शक्ति समाज व राष्ट्र की संरक्षिका' लेख से प्राप्त हुये। आज जिस तरह हमारे राष्ट्र का, समाज का, परिवार का, सामाजिक परिवेश दूषित हो रहा है, पारिवारिक मूल्य टूट रहे हैं, परिवार का विघटन हो रहा है, इसे बचाने का काम महिला सशक्तिकरण से ही हो सकता है। नारी के विकास के लिये नारी में स्वास्थ्य, शिक्षा एवं स्वावलंवन का होना अपरिहार्य है। इसके बिना नारी के विकास की योजना केवल कपोल कल्पना बनकर धरी रह जायेगी। नारी, उसे अपनी गृहस्थी या जीवन चलाने के लिये सदा अपने पति या परिवारवालों के प्रति आश्रित रहना पड़ता है। शिक्षा, स्वास्थ्य एवं स्वावलंवन से नारी अनेक प्रकार के षड़यंत्रों एवं बंधनों से निकल सकती है। विकास की इस दौड़ में नारी को अपनी सूझ-बूझ एवं विवेक से आनेवाली चुनौतियों का सामना करना चाहिये, क्योंकि उनके सामने चुनौतियाँ कम नहीं है। उनके विकास में बंधन न्यायोचित नहीं है। समाज विकास पत्रिका से जुड़े सभी माननीय सदस्य विचारक एवं समाज सुधारक हैं। समय समय पर ऐसे सारगर्भित लेखों द्वारा समाज का सही मार्गदर्शन समाज विकास पत्रिका द्वारा हो रहा है। यह भी समाज की एक उपलब्धि है।

विशेष प्रभुकृपा!

शुभेच्छु,
सत्यनारायण तुलस्यान
मुज्जफरपुर, बिहार

सादर प्रणाम, भाई जी।

आपरै सम्पादन में समाज विकास सफल अर आदर्श है किन्तु मेरो ठिकाणो बदल गयो है।

– अम्बु शर्मा
द्वारा - श्री विजय महमियाँ
जलवायु रेजीडेन्सी, फ्लैट-५१३
३३७, मोतीलाल गुप्ता रोड, कोलकाता-८

राजस्थानी हाइकु हिन्दी में

१. आओ दोस्तो,
अपन देश को चरें
मोर्चा बनाएँ।

२. यूज एण्ड थ्रो
क्या आपका, (क्या) हमारा-
युगीन धारा।

३. क्या लिखते हो?
लिखे को मिटाते हैं-
कविजी हँसे!

४. प्रेम से बुला
सिर के बल आएँ,
चने भी खाएँ!

५. ब्रह्मचारी
परकाया प्रवेश,
जै सियाराम!

– केसरीकान्त शर्मा केसरी

भ्रष्टाचार

कोई
क्या करेगा
कर के अनशन?
यहां तो
भ्रष्टाचार में रमा है
कुर्सी के सौदगरों का तन मन।

– सीताराम शेरपुरी
समस्तीपुर (बिहार)

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

सूचना

सभी सदस्यों की सेवा में

प्रिय महोदय,

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की वार्षिक साधारण सभा शनिवार, १ सितम्बर २०१२ को शाम ४.०० बजे सीटीसी हॉल, १२, आर.एन. मुखर्जी रोड, ४ तल्ला, कोलकाता-१ में निम्नलिखित विषयों के विचारार्थ आयोजित की गई है।

सभा की अध्यक्षता सम्मेलन सभापति श्री हरिप्रसाद कानोड़िया करें।

सभी सदस्य सादर आमंत्रित हैं।

भवदीय
संतोष सराफ
राष्ट्रीय महामंत्री

विचारार्थ विषय :-

१. सम्मेलन के वित्तीय वर्ष २०११-२०१२ के आय व्यय का लेखा-जोखा तथा संतुलन पत्र, जैसा कि लेखा परीक्षकों द्वारा जाँचा गया है, को स्वीकृत करना।
२. सम्मेलन के २०११-१२ वर्ष के क्रियाकलाप का प्रतिवेदन प्राप्त करना और उस पर चर्चा करना।
३. लेखा परीक्षक की नियुक्ति करना।
४. विविध : अध्यक्ष की अनुमति से।

विशेष -

वित्तीय वर्ष २०११-१२ के आय-व्यय के लेखा-जोखा के बारे में अगर किसी सदस्य को कोई जानकारी प्राप्त करनी हो तो कृपया २५ अगस्त २०१२ तक लिखित तौर पर सम्मेलन कार्यालय में भिजवाने का कष्ट करें।

सभी अखिल भारतीय समिति के सदस्यों की सेवा में

प्रिय महोदय,

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की अखिल भारतीय समिति की आगामी बैठक रविवार, २३ सितम्बर २०१२ को प्रातः ११ बजे से मर्चेन्ट चैम्बर ऑफ कॉमर्स, १५बी, ओल्ड कोर्ट हाउस स्ट्रीट (हेमन्त बसु सरणी), कोलकाता-७००००१ में निम्नलिखित विषयों पर विचारार्थ आयोजित की गई है।

बैठक की अध्यक्षता सम्मेलन सभापति श्री हरिप्रसाद कानोड़िया करेंगे।

आपकी उपस्थिति सादर प्रार्थित है।

विचारार्थ विषय :–

१. गत बैठक की कार्यवाही पारित करना
२. महामंत्री की रपट
३. आर्थिक स्थिति की समीक्षा
४. एकल सदस्यता सम्बन्धी आवश्यक संवैधानिक संशोधनों पर विचार-विमर्श एवं निर्णय
५. समाज सुधार एवं समरसता पर विचार-विमर्श।
६. विविध – अध्यक्ष की अनुमति से।

भवदीय

संतोष सराफ
राष्ट्रीय महामंत्री
०९८३०० २१३१९

IISD

SREI Foundation

A Gateway to Careers

"Educate Morally & Technically"
— **Swami Vivekananda**

Swami Vivekananda Merit Scholarship upto 100%

Quality Higher Education at lowest prices
– a corporate social responsibility

3 Yrs. **BBA** ₹ 75,000	2 Yrs. **MBA + PGPM** ₹ 85,000
3 Yrs. **BCA** ₹ 75,000	2 Yrs. **MBA (Hospital Admin.)** ₹ 95,000

ELIGIBILITY & SELECTION

FOR MBA

- BACHELOR'S DEGREE IN ANY DISCIPLINE
- APPEARING FOR FINAL DEGREE EXAMINATION
- GROUP DISCUSSION
- PERSONAL INTERVIEW
- ★ APPLICANTS WITH CAT / MAT / XAT ARE PREFERRED

FOR BBA & BCA

- 10 + 2 PASSED FROM ANY HIGHER SECONDARY BOARD/COUNCIL

Assistance for placement

Eminent Faculty
Regular / Weekend Classes
AC Classrooms/Hostel

Achieve your Aspiration ...
... be a **Corporate Leader !**

Complimentary Courses with MBA, BBA, BCA :

- Spoken English
- Foreign Languages
- Soft Skills Training from HCL - CDC
- ERP Training (Microsoft Certified)
- Company Secretaryship / Chartered Accountancy / Administrative Services
- Entrepreneurship Development

Other Courses :

- Company Secretaryship • Advocateship
- E-Tuition
- Montessori Teacher Training (1 Year Diploma)
- Language Courses : Functional English, Spoken English, Spanish, Italian, Russian, German, Chinese, Japanese, Arabic, Burmese, Persian, French, Korean, Sanskrit and Hindi
- NDA / CDS – UPSC Examinations and SSB Interview
- Certificate Course in Computer Applications
- Advanced Diploma in Financial Management
- Entrepreneurship Development
- Vocational & Technical Training
- Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examinations (Prelim and Main)
- WBCS (Executive) and Judicial Services Examination (Prelim and Main)
- Chartered Accountancy (CPT, IPCC & Final)
- Diploma in Banking and Finance
- Preparatory course for Entrance Examination of MD, MS, MRCP (Medicine) – Part-I and DNB – Part-I

Recognised by UGC, Ministry of HRD, Govt. of India, Approved by Joint Committee of UGC, AICTE & DEC

INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

Unit - I
IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata - 700 106
Ph : 2335 2378/2861, Fax : 2335 2379
E-Mail : info@iisdedu.in
Website : www.iisdedu.in

Unit - II
9, Syed Amir Ali Avenue, 5th Floor
Kolkata- 700017, Ph : 4001 9894
E-Mail : iisdunit2@gmail.com
Website : www.iisdedu.in

सम्पादकीय

राजनीति के चक्रव्यूह में फँसा आर्थिक विकास

सीताराम शर्मा

वर्तमान मे देश जिस कारण आर्थिक दौर से गुजर रहा है उसके कई कारण गिनाए जा सकते हैं, लेकिन सबसे बड़ा कारण आर्थिक मोर्चे पर संप्रग सरकार की निष्क्रियता एवं निर्णयहीनता है। यह सर्वविदित है कि केन्द्रीय मंत्रिमंडल में आपसी सामंजस्य नही है। प्रणव मुखर्जी के वित्तमंत्री काल में उनके राजनैतिक कद के आगे शायद प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की भी नहीं चलती थी। राष्ट्रपति पद के लिये संप्रग की ओर से प्रत्याशी बनाये गये प्रणव मुखर्जी के वित्तमंत्री पद से त्यागपत्र देने के बाद प्रधानमंत्री ने वित्त मंत्रालय की कमान संभालते ही जिस तरह प्रणव मुखर्जी के अनेक फैसले बदलने के संकेत दिये हैं उससे स्पष्ट है कि प्रधानमंत्री प्रणव मुखर्जी के अनेक निर्णयों से सहमत नहीं थे, लेकिन असहाय मूक दर्शक थे। अतः विरोधी दलों के विरोध की बात तो अलग, कांग्रेस के अन्दर ही आर्थिक नीतियों पर सहमति नहीं थी। वर्तमान वित्तमंत्री पी. चिदंबरम के साथ प्रधानमंत्री डा० मनमोहन सिंह का तालमेल सही बताया जाता है। पता चला है कि प्रधानमंत्री एवं वित्तमंत्री ने वित्त मंत्रालय के अधिकारियो को यह निर्देश दिया है कि वे ऐसा उपाय करें जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था को लेकर देश-दुनिया में जो नकारात्मक माहौल बन गया है उसे बदला जा सके। यह एक अजीब स्थिति है, क्या ऐसी नसीहत प्रणव मुखर्जी को नही दी जा सकती थी? संभवतः गैर-राजनैतिक प्रधानमंत्री अपनी राजनैतिक सीमाओं के चलते मंत्रिमंडल पर दवाब नही डाल पाये। समस्या यह है कि मनमोहन सिंह अपनी बात दबंग तरीके से नही रख पाते। यह जान लेने के बाद भी कि उनके मंत्रिमंडलीय सहयोगी गलत हैं, वे कुछ नहीं कर पाते। लड़खड़ाती अर्थव्यवस्था को जब सुधार की जरुरत थी, तब मनमोहन सिंह सरकार ने सुधार के वे कदम भी नहीं उठाये, जो उनके निर्णय के अधीन थे। छोटे-छोटे मामलो मे भी वे अपनी बात नही मनवा पाते। मसलन अनाज वितरण के मामले मे प्रधानमंत्री, कृषिमंत्री शरद पवार को राजी नहीं कर पाये, इसके कारण करीब ६० हजार टन पुराना अनाज सड़ रहा था, दूसरी ओर भारत की करीब एक-तिहाई आबादी को भूखा सोना पड़ता था। केन्द्र एवं राज्य सरकारें सुप्रीम कोर्ट के इस आदेश तक को नजरअन्दाज कर गई हैं कि अनाज को सड़ने के बजाए गरीबों के बीच बांट देना चाहिये।

आर्थिक विकास की अटकी कहानी के लिये कौन जिम्मेवार है? सरकार विपक्ष के साथ भी सहमति बनाने में असफल रही है। राज्यसभा में भाजपा के कांग्रेस से अधिक सदस्य हैं और भाजपा बीमा, पेंशन तथा खाद्य सुरक्षा बिल से जुड़े विधेयकों का समर्थन करने को तैयार भी है। लेकिन भाजपा का कहना है कि इन मद्दों पर कांग्रेस ही बंटी हुई है और सदन मे विधेयक नही ला रही है।

प्रधानमंत्री भारत की सफलता की कहानी को ध्वस्त होते देख रहे हैं, लेकिन कुछ कर नहीं पा रहे हैं। हाल का बजट इसका उदाहरण है। आर्थिक मन्दी का सबसे प्रमुख कारण राजनैतिक स्थायित्व का अभाव है। सरकार के सहयोगी दलों का कुछ अलग ही राग है। क्या सफलता की कहानी खत्म हो चुकी है? ८-९ प्रतिशत का आर्थिक वृद्धि का दर लुढ़क कर ६-७ प्रतिशत पर आ गया है। अमेरिकी डालर की तुलना में रुपया लगातार गिरता जा रहा है। घटता निर्यात एवं उद्यागों में गिरावट बयां करते है कि सब कुछ बस चार दिन की चांदनी, फिर अंधेरी रात वाली बात जैसी थी।

राजनीति के चक्रव्यूह में फँसे आर्थिक विकास के रथ को निकालने की आवश्यकता है। जनता में महंगाई के चलते गहरा असंतोष है। राजनैतिक दलों के लिये यह समय चुनावी लाभ-हानि के बारे मे सोचने का नहीं बल्कि चुनौतियों से पार पाने का है। २०१४ के संसदीय चुनाव के दबाब ने सभी राजनैतिक दलों को पंगु बना दिया है। सरकार को "अभी तो आफत काटो" की नीति पर चलना छोड़ कर स्थायी हल हेतु कार्य करना होगा। देश के समक्ष इस समय जो चुनौतिया हैं वे अत्यधिक गम्भीर हैं एवं गम्भीर तथा तत्काल समाधान मांगती हैं।

अध्यक्षीय

"संगठन - सुधार"

– हरिप्रसाद कानोड़िया

राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

सभी लोगों को विशेष आनन्द है कि आप का मारवाड़ी सम्मेलन १९३५ में स्थापित होकर अपने ७७वें वर्ष में उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। राष्ट्र में अपने समाज के सभी लोग राजस्थान से आकर देश के छोटे-छोटे कोनों में बसे हैं और अपना व्यवसाय कर रहे हैं। साथ ही एक छत के नीचे संगठित हो कर मजबूती से रहेंगे। यह क्रांतिकारी कदम है। व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय समस्याओं का हल करने के लिये एक विशाल संगठन की जरूरत है। हमें उसी दिशा में अकेले और सबको साथ लेकर बढ़ना है। हमें राष्ट्र को मजबूत बनाना है। राष्ट्र मजबूत होगा और प्रगति करेगा तो हम सभी मजबूत होंगे खुशहाल होंगे।

समाज सुधार

समाज सुधार की विशेष जरूरत है। व्यक्ति से ही समाज और राष्ट्र का सुधार होता है। पहले अपने को सुधारें फिर चेष्टा करें दूसरों को सुधारने की। यदि कोई नहीं सुधरे तो उसे उसके भाग्य पर छोड़ दें। होनी ही बलवान होती है। संत रामसुख दास जी कहते थे – दान, मदद, सहायता, अपना परिवार, नजदीकी भाई-बंधु, दूर के सगे-संबंधी, सखा, समाज और फिर देश की करो। घर में कंजूसी, बाहर में दिखावा। मंदिर में चढ़ावा देने से नहीं परन्तु भगवान से प्रेम करने से ईश्वर की अनुकम्पा होती है। गाँधीजी को बापू कहते थे। क्यों-क्यों? सोचें। क्योंकि वे सादगी से रहते थे। भारत के प्रथम प्रधान मंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू जी कीमती कपड़े पहना करते थे और उनके कपड़े बिलायत से धुल कर आते थे। फिजूलखर्ची बन्द करने की कोशिश करें। पूरा संसार कर्ज में डूबा रखा है।

हमारी बहुएँ – बेटियों से प्यारी

बहू को प्यार ही प्यार दें। उनकी कमियाँ नहीं निकालें। उनकी कमजोरियों पर ध्यान न दें। प्यार सब छिपा लेता है। जैसे माँ अपने बेटे और बेटी का दोष छिपाती है। आप भी बहू की कमियों को छिपाएँ। बहुएँ भी सास का आदर करें, उन्हें प्यार दें। दोनों अनुशासन में रहें। संस्कार लें संस्कार दें, खुशी लें खुशी दें। इससे नई पीढ़ी संस्कारमयी बनी रहेगी। गलत आदत में नहीं पड़ेगी। बहू जब सास बनेगी तो अपने बहू को प्यार देगी। प्यार से जगत जीता जा सकता है। तानसेन के संगीत में इतना प्यार था जिससे प्रकृति भी स्थिर हो जाती थी। प्रेम और सरल हृदय में ही कृष्ण-राम बसते हैं।

नारी शक्ति

हम सभी देवियों की पूजा आराधना करते हैं। लड़ाई में जाने से पहले देवी की उपासना कर जाते थे। श्रीराम और रावण भी अपने ईष्ट देवी की आराधना कर के लड़ाई लड़ने गये थे। रावण को सफलता नहीं मिली क्योंकि उसने एक नारी, सीता माँ को यातना दी। लड़कियों को उच्च शिक्षा दें और सभी कार्यों में कुशल बनाएँ। मित्तव्ययिता सिखाएँ, सादगी सिखाएँ। लड़कियाँ अपने भाग्य का खाती हैं। राजा और सात बेटियों की कहानी याद रखें। एक राज्य ज्योतिष की बेटी की कहानी भी याद रखें। (मेरे लेख में विवरण है - हमारी प्यारी बेटीयाँ)

हमारे युवा-हमारे गौरव

हम आत्मा हैं, हम अमृत पुत्र हैं। हमें आनन्द चाहिए। आनन्द प्रेम में है। प्रेम जीवन को सुडौल बनाता है। शरीर, दिमाग और आत्मा को सुन्दर बनाता है। शरीर व्यायाम से, दिमाग अध्ययन से, आत्मा ईश्वर-प्रेम से स्वस्थ रहती है। आप १०० वर्ष जीवन-यापन कर सकते है। गीता में भगवान श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं, न कम खाओ न अधिक खाओ।

सदा संतुलित भोजन करें और तामसी, राजसी भोजन से बचे तो शरीर सदा स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट रहता है। हाथी, घोड़ा शाकाहारी है उसमें कितनी ताकत है; यहाँ तक कि हम मोटर को हॉर्स पावर से ही नापते हैं। शेर, चिता मांसाहारी हैं, देखें कितनी संख्या बची है उनकी। गाय शाकाहारी है। अमृतमय दूध देती है। तामसी भोजन आपके बुद्धि को तामसी बना देता है। शिक्षा लें। अध्ययन करें। कर्म करें। व्यापार करें। उच्च शिक्षा लेकर कहीं कुछ दिन कार्य करें। फिर अपना व्यापार शुरु करें। ऐसे बहुत से उदाहरण हैं जो पहले अपने संबंधी के पास नौकरी करते थे आज वह करोड़पति हैं। कहावत है – व्यापार में ऊँची लक्ष्मी, कृषि में मध्यम और नौकरी में न्यूनतम लक्ष्मी है। आप स्वयं होशियार हैं। अपने समाज में कहावत है – शराब नाश करता है। अभी दुःख होता है, छोटे-छोटे युवक गांव में शराब पीकर खुद का नाश कर रहे हैं। शराब से जानलेवा दुर्घटनाएँ, परिवार में अशांति, पाचन तंत्र में गड़बड़ी, अनिद्रा, दिमाग की क्षति, पारिवारिक बजट में गड़बड़ी, व्यापार में नुकसान, चोरी करने की स्थिति, पत्नी-बच्चों को पीटना, आत्महत्या आदि अनेक दोष उत्पन्न हो जाते हैं। परिवार बर्वाद हो जाता है। शराबी दोस्त से २ मील दूर रहना चाहिए। ईश्वर की शरण ले। नारी को अपनी शक्ति अपनानी है। सारे धर्म भी शराब के विरुद्ध है। धूम्रपान और पान-गुटका से कैंसर होता है। भांग से दिमाग और हृदय का रोग होता है। भगवान ने आपको अमूल्य जीवन दिया है। मनुष्य जीवन देवताओं को भी दुर्लभ है। इस जीवन में ईश्वर से प्रेम और सेवा करें।

हमारा यही नारा हो - सादगी, फिजूलखर्ची विवाह शादी में बन्द, सदस्यता बढ़ाना, संगठन मजबूत करना, राजनीति में नैतिकता से शामिल होना, नारी-शक्ति और युवा-शक्ति को पहचानना। शादी विवाह, सिल्वर जुबली, गोल्डन जुबली में फिजूल खर्चा नहीं करें।

दसांश

दसांश मतलब हमारी कमाई का दसवाँ हिस्सा। इसे कैसे खर्च करें, पहले समाज के लिये फिर किसी संस्था के लिएः–

माननीय सामाजिक बंधुओं से अनुरोध है कि वे दसांश जरूर निकालें। अपने कमाई का कुछ अंश, अलग इकट्ठा करें। इस दसांश का पहला अधिकार समाज एवं जरुरतमंद सामाजिक बंधुओं के लिये। उसके बाद किसी संस्था के लिए। यह पैसा समाज की उन्नति के लिए देना चाहिए, जैसे सामाजिक भवन निर्माण के लिए, सामूहिक विवाह के लिए, सामाजिक सम्मेलन के लिए।

यह पैसा सामाजिक परिवार के जरुरतमंद बंधुओं के लिये जिसकी आर्थिक स्थिति ठीक न हो। जिस कन्या का विवाह न हो, उस कन्या का विवाह करवाने में सहायता करें। जरुरतमंद होशियार बच्चों की पढ़ाई में सहायता करें। प्राकृतिक आपदा से पीड़ित जरुरतमंद का इलाज करवाने में सहयोग करें।

दसांश आप भी दें और अपने रिश्तेदारों को भी देने की सलाह दें। यह काम सेवक बनकर करके देखिये फिर देखिए कितनी शांति मिलती है।

कहा जाता है कि कमाई का दसवाँ हिस्सा भगवान को देना चाहिए, पर भगवान है कहाँ? भगवान हर आत्मा में है। इसीलिए हर इंसान को दसांश का जरुरतमंदों के लिए उपयोग करना चाहिए। जरुरतमंदों के दिल में ही भगवान है और हमें जरुरतमंदों की जरुरत पूरी होने से उनकी दुआ मिलती है।

– गौरीशंकर गुप्ता
पुराना बस स्टैंड, काली मंदिर के पास
राजनांदगांव (छत्तीसगढ़)

नारी–शिक्षा और शिक्षण में महिलाओं का योगदान

– **सन्तोष सराफ**, राष्ट्रीय महामंत्री

शिक्षण के क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका पश्चिमी और विकसित देशों में हालाँकि बहुत पहले से रही है, विकासशील देशों में यह विषय १८वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ही चर्चा में आया। अर्जेन्टीना के अर्थशास्त्री नेता मैनुअल बेलग्रानो (Manuel Belgrano: 1770 - 1820) ने नारी–शिक्षा और शिक्षिति महिलाओं की शिक्षण में भागीदारी के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया। उनके नारे "An ignorant woman raises unable, retarted citizen" ने दक्षिण अमिरकी देशों में इसे चर्चा का ज्वलंत विषय बना दिया।

जहाँ तक भारत का प्रश्न है, आरंभ में (वैदिक युग) यहाँ महिलाओं को शिक्षा और अन्य क्षेत्रों में पुरूषों के समकक्ष अधिकार प्राप्त थे। ऋग्वेद और उपनिषदों में अनेक विदुषी और मनीषी महिलाओं के दृष्टांत मिलते है। मध्यकालीन भारत में यद्यपि कुछ शासकों ने इस क्षेत्र में प्रयास किया, विभिन्न धर्मों के विभिन्न प्रथाओं (उदाहरणार्थ – पर्दा प्रथा) के कारण नारी–शिक्षा के क्षेत्र में गम्भीर अवनति हुई। ब्रिटिशकाल में नारियों के संस्थागत शिक्षण की नींव डाली गयी और बीसवीं शताब्दी के तीसरे–चौथे दशक से इसमें उत्तरोत्तर प्रगति हुई है।

शिक्षण के क्षेत्र में राष्ट्र के कुछ हिस्सों में महिलाओं की भागीदारी अच्छी है, जैसे - केरल। यहाँ प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में महिला शिक्षिकाओं का प्रतिशत है — सरकारी विद्यालयों में ७१ प्रतिशत और निजी विद्यालयों में ७५ प्रतिशत। परिणाम जगजाहिर है – १०० प्रतिशत साक्षरता प्राप्त करनेवाला देश का प्रथम प्रदेश है केरल।

पूरे विश्व–स्तर पर भी देखा जाए तो जहाँ भी शिक्षण में महिलाओं की भूमिका ज्यादा रही, वहाँ अच्छे परिणाम देखने को मिले। इसके कारण हैं – महिलाओं की बच्चों को बेहतर समझने की क्षमता; बच्चों का महिलाओं से भयमुक्त होना और कोई बात कहने में न झिझकना; महिलाओं का अपेक्षाकृत ज्यादा दयालु, संवेदनशील और सहनशील स्वभाव, इत्यादि।

स्वतंत्र्योत्तर आधुनिक भारत में स्त्री–शिक्षा राष्ट्र–निर्माण का एक अनिवार्य पहलू है। वर्त्तमान आंकड़ों के अनुसार, भारत में, करीब २० करोड़ महिलाएँ/लड़कियाँ अब भी निरक्षर हैं। यह भी पाया गया है कि ग्रामीण इलाकों में नारी-साक्षरता की दर (३१%), शहरी इलाकों के दर (६४%) से काफी कम है। साक्षरता की यह दर न सिर्फ इन महिलाओं के जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है वरन् उनके परिवारों और राष्ट्र के विकास में भी बाधक है। इसके अतिरिक्त किसी महिला का अशिक्षित होना उसके खुद के स्वास्थ्य और उसके बच्चों के सर्वांगीण विकास में भी एक बड़ी बाधा है।

उपर्युक्त से स्पष्ट है कि हमें इस क्षेत्र में गम्भीर कदम उठाने की आवश्यकता है—खासकर ग्रामीण इलाकों में। इसके लिए सरकार, गैर–सरकारी संस्थाओं और हम सभी को भी पूरे प्राण–पन से आगे आने की आवश्यकता है। यह संतोष का विषय है कि हमने इस क्षेत्र में अच्छी प्रगति की है लेकिन मंजिल अभी कोसों दूर है।

FREE SCHOLARSHIP

MARWARI SAMMELAN FOUNDATION

(A Trust of All India Marwari Federation)

Invites application from the meritorious and needy students of the society for scholarships to pursue Post Graduate Higher Education in the fields of Engineering. Technical, Civil Services, Medicine, Management etc.

Eligibility : (A) Meritorius student with excellent academic record between the age of 17-25 years and having secured admission in a recognized educational institution purely on the basis of merit. (B) Annual income of the perents of the candidate should preferably be less than Rs. Two and a Half Lakhs.

Procedure: (A) Application with details of past academic records, proof of admission, parent's income/ along with passport size photograph may be submitted duly recommended by any branch of Marwari Sammelan/ Associated Organisations. (B) The Scholarship payable per student per year will be a maximum of Rs. Two Lakhs only. (C) One or two scholarships per academic year is reserved for girl students. (D) The assistance may be in the form of Grant/ Scholarship/ Interest Free Loan. (E) Eligible students may be invited for interview.

Please apply to :
Chairman,
Higher Education Committee,
All India Marwari Sammelan,
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Phone & Fax : (033) 22680319
e-mail: aimf1935@gmail.com

लेख

माँ लक्ष्मी का आगमन और रूष्ट होना! क्या कॉक-टेल पार्टी से व्यापार की प्रगति होती है?

– हरिप्रसाद कानोड़िया

मारवाड़ी समाज अपनी सादगी, ईमानदारी, नम्रता, सामंजस्य, व्यावहारिक और व्यापारिक कुशलता, तीक्ष्ण बुद्धि, ईश्वर में आस्था, सेवा की भावना, रिस्क लेने की क्षमता और भगवान नारायण और लक्ष्मीजी पर विश्वास के कारण पूरे संसार में फैल गये। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना १९३५ में 'म्हारो लक्ष्य राष्ट्र की प्रगति' और संगठन के लिये की गयी। समाज संस्कार की प्रेरणा करता रहे।

हम राजस्थान से खाली हाथ और खाली पेट आये। परिवार को देश में छोड़ दिया। नौकरी की। काम किया। दलाली की। कंधो पर रख कर कपड़े बेचे। छोटे-छोटे व्यापार करने में कभी किसी प्रकार की शर्म नहीं किया। कभी किसी के सामने हाथ नहीं फैलाये। अपने समाज के गुणों का ही श्रृंगार किया। बढ़ते-बढ़ते छोटा व्यापार बड़ा हो गया। अब बेटे बड़े हो गये, पोता-पोती हो गये। विवाह हो गये। पोता संस्कार में कुछ दिन रहा है। फिर व्यापार की प्रगति के लिये होटल, क्लब जाने लगा। कहा गया - एक दो पेग पीने से कुछ नहीं होता है। शायद दिल के लिए ठीक होता है। चालू हो गया पीना। टेस्ट आ गया। फिर क्या था पैसे की कमी नहीं। बिल का भुगतान की तंगी नहीं। ऑफिसर का महीना तो निर्धारित होता है। पेग बढ़ते रहा है।

पिताजी कहते रहे बेटा देर से मत आओ। एक पेग भी ठीक नहीं है। एक रसगुल्ला खाओ तो २-३ भी खा लेते हो। शायद १० रसगुल्ला खा लो अगर पेट जवाब न दे तो। बेटा लक्ष्मण-रेखा मत पार करो। कौन सुनता है? धीरे धीरे घर में बार खुल गया। छोटा या बड़ा फ्लैट है, अगर घर में बार नहीं तो वह आधुनिक नहीं है। घर में पीने लगे साहब। माँ-बाप देखते रहे। छोटे बच्चे भी समझ रहे थे सोच रहे थे। हम भी बड़े होंगे तो मजा लेंगे। शायद छुपकर स्वाद भी लेते होंगे। अब तो बच्चों का विवाह है। मेरे पिता जी तो सुधा-सूखा विवाह किया। मैं तो सुधा का भी अलग से इंतजाम करूँगा। कुछ लोग होंगे। ऑफिसर और आधुनिक लोगों के लिये तो सुधा रखना ही पड़ता है। अगर नहीं रखें तो आयेंगे नहीं। देवता भी तो सुधा पीते थे। पिताजी - इसलिये उनको अहं हो जाता है। बुद्धि नष्ट हो जाती है। इन्द्रासन खो देते है। असुरों का इन्द्रासन पर कब्जा हो जाता है। भगवान नारायण को भूल जाते हैं। दर-दर ठोकर खाते हैं। दु:ख आता है तो नारायण को याद करते हैं। नारायण दयालु हैं। फिर उनको अपनी बुद्धि से राज्य दिलाते हैं। संत कबीर जी कहते हैं, "सुख में सुमरण सब करो तो दुख काहे को होय।" बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। पितृर-भगवान श्री गणेशजी की पूजा होती है। लक्ष्मी का आगमन होता है। बहू तो लक्ष्मी की सूचक है। मैं मारवाड़ी सम्मेलन में मेम्बर हूँ। मैं क्या जवाब दूँगा? वर्षों पहले जाकर दिखावा, आडम्बर, फिजूलखर्च के खिलाफ आन्दोलन करते थे। अभी सदस्यों की मांग से युवकों की एक सेना तैयार की गई। बुजुर्ग लोग भी ऐसे शादी-विवाह में नहीं जायेंगे। अभी ये पाँच-सितारा होटल, क्लब आदि सब अमीरों को फसाने का एक जाल है। यह नशे की दवा, ड्रग्स, ड्रिंक आदि सभी प्रकार के वस्तुएँ मिलती हैं। यहाँ तक की लोगों को यहाँ कोकीन की इंजेक्शन भी बहुत आसानी से प्राप्त हो जाती है और लोग इसके आदी हो जाते हैं। जिससे संस्कार भी खत्म होने लगता है। मैंने काफी मेहनत की है। मेरे बेटे और बहू काफी मेहनती हैं। क्या मैंने कम की है? विशेष वर्तमान तरीके से बुद्धि दे व्यापार को बढ़ाया है।

छोटे-छोटे परिवारों में चोरों की तरह सुधा पाटी होती है। और दिन पर दिन यह हावी होने लगती है। जिससे मेहनत कम होने लगती है। ईमानदारी में भी कमी आने लगती है। मैनेजर सभी कार्यों को देखने लगता है। धीरे-धीरे व्यापार का ह्रास होने लगता है। अच्छे मैंनेजर काम छोड़कर दूसरे काम पकड़ लेते हैं। और जगह खाली हो जाता है। साहब को तो काम आता ही नहीं है।

पिताजी-माताजी कहते हैं - हे माँ लक्ष्मी, आप क्यों आई थीं? आयीं थीं तो इतना तो आती जिससे परिवार हँसी-खुशी रहता और तुम्हारी आराधना करता। अब हाथ तो मत फैलाने देना। तुम्हारी कृपा बनी रहे। माँ लक्ष्मी और प्रभु नारायण का चमत्कार चलता रहे।

जीवन में आनंद से रहने के लिये सुरा और बुरी संगत से दूर — सादगी से रहे और मानवता की सेवा करते रहे। परमहंस भगवान रामकृष्ण जी कहते हैं, "जीव-सेवा ही शिव-सेवा है। कभी किसी वस्तु का अभाव नहीं होता है। मनुष्य निडर रहता है।"

(लेखक सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं।)

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

पदाधिकारी (2011-12)

अध्यक्ष

श्री हरिप्रसाद कानोड़िया

फोन : ०९८३०० ४७९७७

harikanoria@bharatconnet.com

उपाध्यक्ष

श्री रामअवतार पोद्दार

फोन : ०९८३०० १९२८१

rap@wondergroup.in

श्री रामपाल अग्रवाल 'नूतन'

फोन : ०९३३४१ १६३३४

rampalnutanagarwal@gmail.com

श्री ओम प्रकाश खण्डेलवाल

फोन : ०९४३५० ४५४२५

khandelwalomprakash@yahoo.com

श्री रमेशचन्द गोपीकिशन बंग

फोन : ०९४२३१ ०१७००

श्री संतोष अग्रवाल

फोन : ०९३२९१ ००९६३

globalindia@hotmail.com

श्री रामकुमार गोयल

फोन : ०९८८५२ ८४८४८

cmd@arclimited.com

महामंत्री

श्री संतोष सराफ

फोन : ०९८३०० २१३१९

roadcargo@vsnl.net

संयुक्त मंत्री

श्री संजय हरलालका

फोन : ०९८३०० ८३३१९

०९८०४१ ५४११५

sevasansar@gmail.com

संयुक्त मंत्री

श्री कैलाशपति तोदी

फोन : ०९८३०० ४४०७९

kptodi@rediffmail.com

कोषाध्यक्ष

श्री आत्माराम सोंथलिया

फोन : ०९८३१० २६६५२

०९४३३० २८८०८

jbccsonthalia@yahoo.com

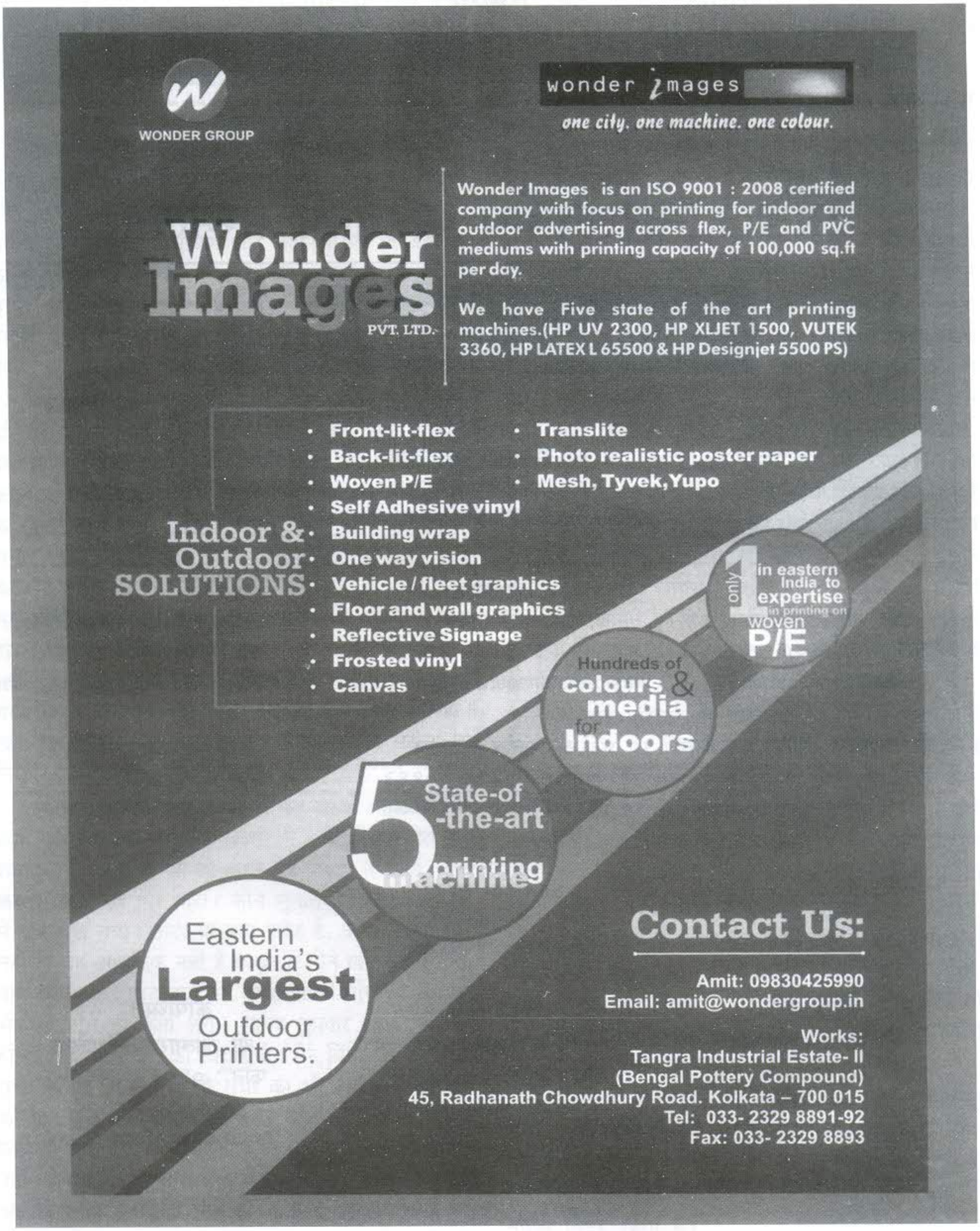

WONDER GROUP
wonder images
one city. one machine. one colour.
Wonder Images PVT. LTD.
Wonder Images is an ISO 9001 : 2008 certified company with focus on printing for indoor and outdoor advertising across flex, P/E and PVC mediums with printing capacity of 100,000 sq.ft per day.
We have Five state of the art printing machines.(HP UV 2300, HP XLJET 1500, VUTEK 3360, HP LATEX L 65500 & HP Designjet 5500 PS)
Indoor & Outdoor SOLUTIONS
• Front-lit-flex
• Back-lit-flex
• Woven P/E
• Self Adhesive vinyl
• Building wrap
• One way vision
• Vehicle / fleet graphics
• Floor and wall graphics
• Reflective Signage
• Frosted vinyl
• Canvas
• Translite
• Photo realistic poster paper
• Mesh, Tyvek, Yupo
only 1 in eastern India to expertise in printing on woven P/E
Hundreds of colours & media for Indoors
5 State-of -the-art printing machines
Eastern India's Largest Outdoor Printers.
Contact Us:
Amit: 09830425990
Email: amit@wondergroup.in
Works:
Tangra Industrial Estate- II
(Bengal Pottery Compound)
45, Radhanath Chowdhury Road. Kolkata – 700 015
Tel: 033- 2329 8891-92
Fax: 033- 2329 8893

केन्द्रीय समाचार

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन में झंडोत्तोलन

कोलकाता, १६ अगस्त। स्वतंत्रता दिवस की ६५वीं वर्षगांठ पर आमहर्स्ट स्ट्रीट स्थित सम्मेलन भवन में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने झंडोत्तोलन किया। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि देश में आर्थिक रूप से जो असमानता है वह चिन्ता का विषय है। अधिकाधिक कल-कारखानों के खुल जाने भर से ही यह असमानता दूर नहीं होगी। इसके लिए गंभीर प्रयास करने होंगे। उन्होंने कहा कि आजादी की अहिंसक लड़ाई की शुरुआत महात्मा गांधी ने की जिसमें अंततः उन्हें सफलता मिली। इसलिए हमें भी भ्रष्ट्राचार-मुक्त शासन के लिए स्वयं लड़ाई लड़नी पड़ेगी। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि आजादी के बाद देश ने काफी तरक्की की है किन्तु आज भी हमें जहाँ पहुँचना चाहिए था, नहीं पहुँच पाये हैं। राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि देश में सभी लोगों के पास आज तक बिजली नहीं पहुँची। हमारे देश के प्रधानमंत्री ने आज ही घोषणा की है कि आगामी दो वर्षों में प्रत्येक गांव तक बिजली पहुँचायेंगे। इस मौके पर राजस्थान से पधारे कवि श्री अब्दुल गफ्फार ने वीर-रस की कविता **'दाग गुलामी के अब तक हम नहीं धो पाये हैं, आजाद होकर भीहम आजाद नहीं हो पाये हैं'** सुनाकर वाहवाही बटोरी। राजस्थान से ही पधारे श्री प्रेम नगौरी ने सुन्दर गीत सुनाये। कोलकाता के कवि श्री जय कुमार रुसवा ने **'झण्डे की व्यथा'** तथा श्री जगदीश प्रसाद पाटोदिया ने राजस्थान की शौर्य गाथा पर कविता पाठ किया। संयुक्त राष्ट्रीय मंत्री श्री संजय हरलालका ने धन्यवाद दिया। इस मौके पर राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया, संयुक्त मंत्री श्री कैलाशपति तोदी सहत पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया, प्रांतीय महामंत्री श्री विजय डोकानिया, सर्वश्री जुगल किशोर जैथलिया, विश्वनाथ भुवालका, गोविन्द अग्रवाल, रामनिवास चोटिया, सुशील शर्मा, ओमप्रकाश अग्रवाल, प्रेम सुरेलिया, रविन्द्र लडिया, कैलाश अग्रवाल, अशोक पारीक, ओम लडिया सहित अन्य राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय पदाधिकारी व सदस्य उपस्थित थे।

जन्माष्टमी के पुनीत अवसर पर एक विवेचन

श्रीकृष्ण का विराट स्वरूप

– श्यामसुन्दर बगड़िया
२०, गणेशचन्द्र एवेन्यू, कोलकाता-१३

राधा का कृष्ण गीता का कृष्ण कब बना? प्रेम की बाँसुरी बजाने वाले ने चुनौती का पाँचजन्य कब फूँका? गोकुल की गायों को चराने वाला क्योंकर भारत की राजनीति को चलाने लगा? महारास रचानेवाला कैसे महायुद्ध में रम गया? खिलंदर कैसे योगेश्वर बन गया?

केवल यह विवेचन ही भारतीय मानस को झकझोर देने में सक्षम है। सदियों से कृष्ण–बालकृष्ण, लीलाकृष्ण, राजनीति का कृष्ण, महाभारत का कृष्ण–के जीवन चरित्र के वर्णन में इतनी विविधता, विचित्रता आई है कि सही स्वरूप व क्रमबद्धता का सूत्रसंधान भी दुष्कर हो जाता है।

भारत का सम्पूर्ण आनन्द–माधुर्य़, चिन्तन–मनन, नीति-शौर्य, गौरव–महात्म्य का बहुआयामी, बहुरंगी वितान–विशाल वटवृक्ष स्वरूप कृष्ण में आरोपित है।

कोई कृष्ण को वात्सल्य रसावतार, कोई सखा, कोई गुरु, कोई भोगी, कोई योगी, कोई छलिया, कोई रसिया, कोई राजेश्वर, तो कोई उसे साक्षात् ब्रह्म मानता है। इस बहुआयामी बहुरंगी वितान को सदियों से आजतक साहित्यकार, मनीषी, भक्त, जनसाधारण, निंदक, प्रशंसक सभी अपनी–अपनी मान्यता व सामर्थ्य के आधार पर नव-विन्यास व नव-अभिव्यक्ति देते आ रहे हैं।

बालकृष्ण नटखट, रसमय, वात्सल्यमय, आनन्दमय है। वह कान्हा है, ग्वालिया है, माखनचोर है। यशोदा का लाडला है, ब्रजमंडल की आँखों का लाल है। गोप-बालाएँ उसकी बलैया लेती हैं, उसकी भोली सूरत, निश्छल मूरत पर न्यौछावर हैं। वह गोपियों से बाल-सुलभ छेड़छाड़–मसखरी करता है। कभी रास्ते चलते किसी गोपी की पानी भरी गगरी फोड़कर किलकारी भरता है, किसी की कभी कौतुक में बाहें मरोड़ देता है। अरे र........................ देखो चंचल नटवर ने घर में घुसकर उस गोपी की तो माखन से भरी लटकती मटकी ही चुपचाप उतार ली और खुद अकेले ही नहीं सब संगी-साथियों के साथ मिल-बाँटकर, छीन-झपट कर आनन्द विभोर होकर हाथ–मुँह में लीप–लीप कर खा रहा है। स्नान करती गोपियों के वस्त्रभरण छिपाकर सहज लुका-छिपी करता, मुस्कुराता कन्हैया उनको अपरिमित आनन्द, वात्सल्य रस प्रदान करता है। पूर्णिमा आ गई है–यमुना तरंगों पर चाँदनी अठखेलियाँ कर रही है। सारा वातावरण शुभ्र, उल्लासमय हो उठा है। भला कन्हैया क्यों चूके? गोप गोपियों के दल इकटठे कर लिए यमुना तट पर। इसकी बाँसुरी की तान पर मतवाले बेसुध होकर रासरस निमग्न हैं सब। ब्रजमंडल के अन्य लोग-लुगाई भी बाल-क्रीड़ाएँ देखने आ गये हैं–आनन्दमय हास–परिहास देखकर परम सुख पा रहे हैं। यदा–कदा वे भी थिरक रहे हैं, गुनगुना रहे हैं। उल्लास का, पावन महारास सहज, स्वतः आयोजित है–मानों स्वर्ग की सारी सम्पदा, सारी कीर्ति घनीभूत होकर बरस रही हो। सारी ऋद्धि-सिद्धियाँ इस महानर्तन में झूम रही हैं। सारी कुंठाएँ विगलित हो गई हैं–अभिमान, बड़प्पन के छुद्र घरौदें ढ़ह गये हैं। छोटे–बड़े, बाल–वृद्ध–वनिता सभी ब्रह्ममय, आनन्दमय होकर घूर्णित–सृष्टि के अंशी बन बैठे हैं। उसी मुरली की तान, रास की झंकार पर आज सम्पूर्ण भारत विभोर है, उल्लसित है, न्यौछावर है। चित्रकार, संगीतकार, मूर्तिकार, नृत्याचार्य़ उसके सहारे ही अपनी–अपनी कला के वर्धन, प्रदर्शन में रत हैं।

मुरलीधर गिरिधर भी है। चंचलता व वीरता का अद्भूत समन्वय है बालकृष्ण। गोकुलवासियों से इन्द्र रुष्ट हो गया—उसकी पूजा-अर्चना में कमी हो गई थी न! अब तो कुपित होकर इन्द्र गोकुल को डुबो ही देगा मूसलाधार वृष्टि से। ऐसे दंभी स्वार्थी देवताओं की पूजा अनुचित है, अनावश्यक है, इस प्रकार उद्घोष किया कृष्ण ने और कौशल से सबके सहयोग से गोवर्धन पर्वत का ही छत्र बनाकर सारे गोकुल की रक्षा की। इस प्रकार पौराणित, इन्द्र आदि देवताओं का ढकोसला समाप्त कर कृषियुग के महत्त्व को प्रतिपादित किया। गोपालन, गोसम्वर्धन, शस्य-श्यामला धरित्री का वर्चस्व स्थापित किया। गायों को चराना, दाना–पानी देना कृष्ण ही आनन्दमग्न हो कर सकता है।

यमुना-तट पर निवास करते हुए बहुत ही भयंकर कालिय नाग का खेल ही खेल में मर्दन कर उस सुरम्य प्रान्तर को निशंक कर दिया। मुष्टिका प्रहार, मल्लयुद्ध आदि में निष्णात था कृष्ण। कंस की सभा में उसके दुर्धर्ष, चाणूर आदि मल्लों को पछाड़ा। पूतना, तृणावर्त, मुर आदि बलशाली दुष्टों का अकेले ही सफाया किया कृष्ण ने। फिर अवसर पाकर मथुरा के निरंकुश आततायी शासक व अपने ही मामा कंस का वध कर मातृ–पितृ ऋण का शोधन किया। तत्पश्चात् अत्यन्त आदर व विनम्रतापूर्वक अपने नाना वृद्ध उग्रसेन को वहाँ का राजा बनाया—स्वयं राजगद्दी पर नहीं जा बैठा। कालान्तर में यही कृष्ण महाशक्तिशाली, अजेय, मल्लयुद्धपारंगत योद्धा जरासंध को भी द्वंद्व के लिए ललकारने की क्षमता रखता है। फिर कौशल से भीम के द्वारा द्वंद्व में अत्याचारी जरासंध का वध करवाकर उसकी कैद में पड़ी १६००० कुमारी कन्याओं को मुक्ति दिलाता है। जब उन्होंने (कन्याओं ने) विलखते हुए विवशता प्रकट की कि अब हम कहाँ जावें, हमें कौन अपनावेगा, कौन शरण देगा, कौन हम से विवाह करेगा? तब, "क्या चाहती हो तुम सब?" पूछा कृष्ण ने। आप ही हमारे रक्षक, भर्ता, पति, परमेश्वर सब कुछ बनें—सबका एक स्वर था। लोक-निन्दा, धर्मशास्त्रों की परवाह किये बगैर उस द्वापर के नीलकंठ ने लांछना का गरल पीकर उन सब लांछिताओं, तिरस्कृताओं को आदरपूर्वक पत्नीपद प्रदान किया। पाण्डवों की राजसूय यज्ञ सभा में द्वारकाधीश श्रीकृष्ण की अग्रपूजा की गई। जलनखोर मंदबुद्धि प्रमादी शिशुपाल व उसके कुछ साथी राजाओं ने श्रीकृष्ण को बुरा-भला कहा। ग्वालिया, गँवार आदि कहकर उसका मखौल उड़ाया गया, उसे अपमानित किया गया। धीरोदात्त कृष्ण बहुत देर तक उनकी बकवास, उनकी गलियाँ सुनते रहे, तिस पर भी हठी शिशुपाल के न मानने पर उससे युद्ध करके वीर श्रीकृष्ण ने उसे यमलोक पहुँचा दिया।

बचपन के गुरुभाई दरिद्र ब्राह्मण सुदामा को फटेहाल देखकर करुणानिधान कृष्ण के आँसुओं से ही अभिषेक का पात्र भर गया। उन्हीं अश्रुकणों से निर्धन मित्र के पैर धोये गये। आकंठ लगाया मित्र गरीब सुदामा को द्वारकाधीष कृष्ण ने—रोम-रोम कृष्ण का भीग उठा। उसका भली प्रकार स्वागत–सत्कार कर उसे बहुत मान–सम्मान व धन-सम्पत्ति प्रदान की। वही महान श्रीकृष्ण कभी अश्वों को सहलाता है, उन्हें खरहरा देता है अपने ही पीताम्बर में। वही कृष्ण कभी ब्राह्मणों का पदत्राण उठाता है, उनके पद-प्रक्षालन करता है, उनकी जूठी पतलें उठाता है। महान कर्मों को सम्पादित करने वाला श्रीकृष्ण, अति साधारण व निम्नकोटि का शूद्रकर्म भी सहज रूप से करनेवाला श्रीकृष्ण युद्धक्षेत्र में अर्जुन का सारथ्य करता है।

तत्कालीन भारत की चेतना–आकांक्षा की धुरी को नियंत्रित करनेवाले, गत्यात्मकता देनेवाले द्वारकाधीश श्रीकृष्ण को कभी 'अहीर की छोहरियाँ छछिया भर छाछ' पर कैसे नचाती थीं? आश्चर्य है! राजनीति, दूरदर्शिता की साक्षात मूर्त्ति कृष्ण ने प्रखर चातुर्य व वाग्मिता का दिव्य परिचय सदैव दिया। कौरवों की सभा में दौत्यकर्म, पांडवों–कौरवों को परामर्श, कुन्ती को सान्त्वना, कर्ण-वध की युक्ति, निर्वीर्य धृतराष्ट्र की सभा में द्रौपदी की लाज-रक्षा, विदुर के घर शाक-ग्रहण, महाभारत के युद्ध विजय का सेहरा पांडवों के सिर—यह है ग्वालिया कृष्ण।

पुरुवंश की पुरानी जीर्ण-शीर्ण राजधानी खांडवप्रस्थ पांडवों को मिली। हिंस्र पशुओं व दुष्ट दस्युओं का गढ़ खांडवप्रस्थ तब तक बीहड़ जंगलमय रह गया था। श्रीकृष्ण की प्रेरणा से इसे जगह-जगह जलाया गया, इसकी साफ सफाई की गई। इस तरह श्रीकृष्ण के कारण ही खांडवप्रस्थ

विशाल भवनों, अभेद्य दुर्गों व सुरम्य राजपथों से युक्त 'इन्द्रप्रस्थ' राजधानी बन सका था।

जब ब्रज से चले थे, वे केवल १४-१५ वर्ष के किशोर थे। महाभारत युद्ध के समय ७५ वर्ष के तरुण कृष्ण ने पूरे तारुण्य व तेजस्विता के साथ लगभग १२५ वर्ष की आयु प्राप्त की। आजीवन यौवन-सौन्दर्य, शौर्य-कीर्ति के दीप्त स्वरूप; न एक केश श्वेत, न एक दन्त क्षय; न आधि, न व्याधि।

कृष्ण समृद्धानंद के पूर्णांक थे। सारे भारत पर मनोराज्य करने वाला लावण्यमय कृष्ण हमेशा माधुर्यभाव से उल्लसित रहता है; कभी विषण्ण, कभी क्षुब्ध नहीं। निराली अदा-छटा इनके मुखमंडल पर विराजती है। सागर की अनंत लहरों की भाँति अनंत केलिक्रीड़ाओं में रत भग्न, ध्वस्त, टुकड़े-टुकड़े हुए, छलछद्म से ग्रस्त भारत के नवनिर्माण में अपनी सारी शक्ति, सारी साधना नियोजित कर देता है। कृष्ण के मन में एक बड़ी कल्पना थी—वे पांडवों को केन्द्रबिंदु बनाकर, छोटे-छोटे राज्यों को समाप्त करके एक शक्तिशाली केन्द्रीय गणराज्य की स्थापना करना चाहते थे। उनकी कल्पना साकार हुई। आसेतु हिमालय एक आदर्श राज्य, एक चक्रवर्ती सम्राट। इस प्रक्रिया में वह शांतभाव से कौरवों का विनाश, अपने ही अग्रजों का विनाश, असंख्य शूरमा-योद्धाओं का विनाश देखता है। कई राज्य-उपराज्यों को नष्ट होते, स्वयं अपनी नारायणी सेना को नष्ट होते, अपने यादव वंश को नष्ट होते देखता है।

समर भूमि में मोहग्रस्त अर्जुन का संशय मिटाते हुए योगेश्वर कृष्ण द्वारा दिव्य-ज्ञान का घोष आज भी अनन्त काल से निनादित है। अनासक्त कर्म, निष्काम भक्ति, स्थितप्रज्ञ योग के उपदेश पर भारत ही नहीं, विश्व मनीषा मुग्ध है।

ऐसे विराट कृष्ण को भारतीय मानस ने उच्चतम स्थान दिया है। वेदव्यास ने श्रीकृष्ण की गरिमा, विराटता, लीला का यशोगान सहस्र विधियों से किया है। बाद में बल्लाभाचार्य, सूरदास, मीरा, रसखान आदि अनगिनत भक्तों, कवियों, चिंतकों ने उनका गायन, विवेचन व मनन किया है। आज भी वह प्रवाह अबाधित है। हमारे सर्वोच्च आदर्श व दर्शन की श्रेष्ठतम उपलब्धि मानो श्रीकृष्ण ही हों।

जन-मन का सम्मोहक, शूद्र-स्त्री को समभाव से देखता, ब्राह्मण-अब्राह्मण को समान आदर देता, धरती के कण-कण से प्यार करनेवाला, सबसे खेलनेवाला, उछलता-नाचता-गाता, कदंब-करील तले मधुर मुरलिया बजाता, गायों को चराता, कृषि करता, अश्वों को हांक लगाता, सारथी बनता, सुविख्यात सुदर्शन चक्र घुमाता ग्वालिया कन्हैया, द्वारकाधीश श्रीकृष्ण, भारत का महाप्राण श्रीकृष्ण—विराट कृष्ण। पता नहीं वह परम ब्रह्म था या नहीं, पता नहीं उसने अपने मुखमंडल में मातु यशोदा को ब्रह्मांड का दर्शन कराया या नहीं, पता नहीं उसने कभी अर्जुन को निखिल तेजोमय विराट सृष्टि का लोमहर्षक दिग्दर्शन कराया या नहीं—किन्तु यह निर्विवाह है कि यह स्वयं में अति विराट है, अति महान है, अनंत ऊर्जा का स्रोत है—मानों सम्पूर्ण ब्रह्मांड की ही विराटता उसमें समाहित हो। ऐसा समन्वय, ऐसा आदर्श, ऐसी महानता, ऐसी सरलता, कहाँ? सचमुच कहाँ मिल पायेगी? किस युग में, किस महापुरुष में, किस समाज में?

गजल

छुप के सूफ़ी भी पीने पिलाने लगे
उनके भी अब कदम लड़खड़ाने लगे
गीत मेरे जो वे गुनगुनाने लगे
मेरे अपने भी आँखें चुराने लगे
देखना इस जमाने की जादूगरी
बेसुरे भी स्टेजों पे गाने लगे
मेरी मिट्टी की है बस यही आरज़ू
तेरे हाथों किसी दिन ठिकाने लगे

अब सियासत का भी ये अजब रंग है
ऐरे-गेरे भी आंखें दिखाने लगे
हाथ थामा था धीरे से उनका कभी
आँखो-आँखो में वो मुस्कराने लगे
महरबान एक पल में बिछुड़ भी गए
जिनको पाने में हम को जमाने लगे।

– मनु महरबान
५५७, मिशन रोड, पठानकोट

प्रान्तीय समाचार

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कानोड़िया का तूफानी बिहार दौरा

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, सम्मेलन के अन्य पदाधिकारियों के साथ, २४ अगस्त २०१२ से २९ अगस्त २०१२ तक, बिहार के विभिन्न जिलों का संगठनात्मक दौरा करेंगे। दौरे का प्राथमिक उद्देश्य शाखाओं की सक्रियता को बढ़ाना तथा सम्मेलन के विभिन्न कार्य-कलापों में उनकी पूरी सहभागिता सुनिश्चित करना है। दौरे के दौरान पटना, गया, मुंगेर, भागलपुर, पूर्णिया, कोशी, दरभंगा, तिरहुत एवं सारन शाखाओं की सभाओं में राष्ट्रीय पदाधिकारीगण भाग लेंगे। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कानोड़िया के साथ राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ एवं राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री श्री कैलाशपति तोदी भी इस दौरे में शामिल होंगे। दौरे का संक्षिप्त कार्यक्रम है – २४ अगस्त २०१२: पटना शाखा की बैठक; २५ अगस्त २०१२: गया शाखा की बैठक; २६ अगस्त २०१२: मुंगेर शाखा की बैठक (बड़हया में) और भागलपुर शाखा की बैठक; २६ अगस्त २०१२: पूर्णिया शाखा की बैठक और कोशी शाखा की बैठक (सहरसा में); २८ अगस्त २०१२: दरभंगा शाखा की बैठक और तिरहुत शाखा की बैठक (मुजफ्फरपुर में); २९ अगस्त २०१२: सारन शाखा की बैठक (छपरा में)।

जोरहाट शाखा द्वारा स्वतंत्रता दिवस पर हरिजनों की सेवा

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन तथा महिला सम्मेलन की जोरहाट शाखाओं द्वारा १५ अगस्त २०१२ को गड्मुर स्थित हरिजन कॉलोनी में बच्चों तथा उपस्थित लोगों में मिठाई, जूस, अल्पहार एवं खेल का सामान बांटा गया। इस अवसर पर शाखा के अध्यक्ष श्री बाबुलाल गगड़, उपाध्यक्ष श्री राजेन्द्र प्रसाद अग्रवाल, मंत्री श्री अनिल केजरीवाल, संयुक्त सचिव श्री कन्हैयालाल हरलालका के साथ श्री रामअवतार अग्रवाल, श्री अनुप दुगड़, श्री महेश अग्रवाल तथा अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की जोरहाट शाखा की तरफ से अध्यक्षा श्रीमती संतोष मोदी, सचिव श्रीमती प्रतिमा भड़ेच तथा श्रीमती सुमन भड़ेच सहित कई गणमान्य समाजसेवी उपस्थित थे।

प्रान्तीय समाचार

पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन की विचारगोष्ठी सफलतापूर्वक संपन्न

पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा, ५ अगस्त २०१२ को गुवाहाटी के छत्रीबाड़ी स्थित लायन्स आई हॉस्पीटल के सभागार में 'आडम्बर, दिखावा, फिजूलखर्ची : चिंता एवं चिंतन' शीर्षक एक विचारगोष्ठी का आयोजन किया गया। गुवाहाटी उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री बी.डी. अग्रवाल ने दीप प्रज्वलित कर गोष्ठी का शुभारंभ किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति बी.डी. अग्रवाल के साथ ही प्रांतीय अध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल, महामंत्री मधुसूदन सीकरिया व संयोजक डॉ. श्याम सुंदर हरलालका मंच पर मौजूद थे।

मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा कि एक जमाने में हमारे समाज के लोग अपने आचार-व्यवहार, नेकी व ईमानदारी के लिए सम्मान की दृष्टि से देखे जाते थे। लेकिन पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण करने की वजह से आज हमारे समाज में विभिन्न प्रकार की विकृतियाँ आ गयी है। उन्होंने कहा कि फिजूलखर्ची पर रोक लगाकर उन पैसों को समाज कल्याण के कार्यों पर खर्च किया जाना चाहिए। मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा आयोजित विचारगोष्ठी को सामयिक बताते हुए उन्होंने कहा कि इस प्रकार की विचारगोष्ठियों में समाज के युवाओं को भी आमंत्रित किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमें ऐसा कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए जिससे समाज बदनाम हो।

अपने स्वागत-भाषण में प्रांतीय अध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल ने मुख्य अतिथि व सभागार में उपस्थित सभी समाजबंधुओं का स्वागत करते हुए कहा कि समाज में व्याप्त विभिन्न कुरुतियों के उन्मूलन व समाज में चेतना जागृत करने के लिए विचारगोष्ठियों के आयोजन की सम्मेलन ने पूर्व की भांति इस बार भी पहल की है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस विचारगोष्ठी में समाज के प्रबुद्ध व्यक्ति विचारों

का आदान-प्रदान कर इन समस्याओं से समाज को मुक्त कराने के लिए कोई उपाय ढूँढ़ निकालेंगे।

दैनिक पूर्वोदय के सलाहकार संपादक बिनोद रिंगानिया ने अपने संबोधन में कहा कि दिखावे व फिजूलखर्ची की समस्या सिर्फ हमारे समाज की ही समस्या नहीं है। पहले हमें यह बात तय करनी होगी कि क्या वाकई आडम्बर, दिखावा, फिजूलखर्ची को समस्या माना जा सकता है? श्रीमती कंचन केजरीवाल, श्रीमती शशि शर्मा, श्री जे.पी. शर्मा ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किये।

श्री रवि अजितसरिया ने कहा कि आडम्बर, दिखावे व फिजूलखर्ची की समस्या का समाधान करने के लिए हमें विवाह के दिन के बजाय सगाई के बाद से ही सभी अतिरिक्त खर्चों पर रोक लगाने का प्रयास करना होगा।

श्री प्रभूदयाल जालान ने कहा कि जिन समस्याओं से समस्त समाज को नुकसान पहुँचता है, उन्हें सुलझाने के लिए हमें मिल-बैठकर निर्णय लेना व उनके उन्मूलन के लिए आंदोलन करना होगा। सर्वश्री ताराचंद ठोल्या, अशोक अग्रवाल (तिनसुकिया) बजरंग लाल अग्रवाल (नगाँव) राजकुमार शर्मा आदि सभी वक्ताओं ने फिजूलखर्ची पर पाबंदी लगाने की पहल करने की जरूरत पर बल दिया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में संयोजक श्री श्याम सुंदर हरलालका ने गोष्ठी के आयोजन के उद्देश्य बताते हुए कहा कि आडम्बर, दिखावे व फिजूलखर्ची की आदत व्यसन में तब्दील होती जा रही है, जिस पर गंभीरता से विचार-विमर्श कर ठोस कदम उठाना जरूरी हो गया है। विचारगोष्ठी में मारवाड़ी सम्मेलन की गुवाहाटी शाखा के कार्यकारी अध्यक्ष श्री ललित धानुका, महामंत्री श्री विजय डागा, सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश खण्डेलवाल, सम्मेलन की नगाँव शाखा के अध्यक्ष श्री बजरंगलाल अग्रवाल, पूर्व प्रांतीय अध्यक्ष श्री विजय मंगलूनिया, प्रांतीय उपाध्यक्ष श्री शिवभगवान शर्मा व श्री पवन सीकरिया, कामख्या शाखा की अध्यक्ष श्रीमती यशोदा अग्रवाल, कामख्या शाखा की पूर्व अध्यक्ष श्रीमती अनिता अग्रवाल, तिनसुकिया से आये श्री अशोक अग्रवाल, श्रीमती मधु डागा, श्रीमती सरला काबरा, डॉ. मृशी अग्रवाल, श्री गोपीकृष्ण जोशी के अलावा काफी संख्या में समाज के प्रबुद्ध व्यक्ति उपस्थित थे। सम्मेलन द्वारा आडम्बर, दिखावा, फिजूलखर्ची की ज्वलंत समस्या पर आयोजित यह विचारगोष्ठी हर मायने में सफल रही। उपस्थित समाज-बंधुओं ने इस विचारगोष्ठी के आयोजन की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हुए कहा कि इससे लोगों में समाज सुधार की चेतना जागृत हुई है। इस विचारगोष्ठी के मुख्य वक्ता पूर्व प्रांतीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल जालान ने स्वास्थ्य-जनित कारणों से आने में असमर्थता की सूचना देने के साथ ही विचार गोष्ठी के हर प्रकार से सफल होने की आशा व्यक्त करते हुए शुभकामनाएँ प्रेषित कीं। महामंत्री श्री मधुसूदन सिकरिया द्वारा धन्यवाद-ज्ञापन व समाज की विभिन्न ज्वलंत समस्याओं पर भविष्य में भी विचारगोष्ठियों के आयोजन के ऐलान के साथ ही गोष्ठी का समापन हुआ।

तिनसुकिया के नितिन ने किया आदर्श विवाह

असम के पहले मारवाड़ी विधायक स्व. राधाकिशन खेमका के पौत्र तिनसुकिया निवासी नितिन खेमका ने आदर्श विवाह कर समाज के सामने उदाहरण पेश किया है। तिनसुकिया के समाजसेवी राजू खेमका के पुत्र नितिन ने हाल ही में नगर के बाबूलाल पोद्दार पथ स्थित श्री राधाकृष्ण मंदिर में डिब्रूगढ़ के बांसवाड़ी निवासी अशोक सिंघानिया की पुत्री सुश्री चंचल से विवाह रचा कर समाज के समक्ष एक आदर्श उदाहरण पेश किया। सादगीपूर्ण इस विवाह में न ही पंडाल का तामझाम था और न ही बारातियों की गहमागहमी। इस दौरान समाज के चंद गणमान्य लोग व सिर्फ वर-वधू के परिजन मौजूद थे।

इनकी उपस्थिति में नितिन व चंचल ने एक दूसरे को वरमाला पहनाई और उसके बाद नितिन ने चंचल की माँग में सिन्दूर भरा। उल्लेखनीय है कि राधाकिशन खेमका ने भी अपने समय में आदर्श विवाह कर समाज में क्रांति की जोत जगाई थी। राधा किशन खेमका ने वर्ष १९४९ में कोलकाता जाकर स्वतंत्रता-सेनानी भंवर लाल सिंधी और सुशीला देवी सिंधी के घर, विलासपुर (मध्यप्रदेश) निवासी विधवा कस्तूरी देवी खेतान के साथ बिना घूंघट के विवाह रचाया था। कस्तूरी देवी के प्रथम पति का निधन वर्ष १९४८ के दंगों में हो गया था। उस समय विधवा-विवाह करना, वह भी बिना घूंघट के एक चुनौतीपूर्ण कार्य था, जिसे समाजसेवी राधाकिशन खेमका ने कर दिखाया। अब उनके पोते ने भी आदर्श विवाह कर समाज के सामने एक उदाहरण पेश किया है।

मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से नवदम्पति को हार्दिक स्नेहाशीष!

मारवाड़ी महिला सम्मेलन की कोलकाता शाखा ने बांटी ७१ व्हील साईकिलें

कोलकाता। स्वतंत्रता दिवस की ६५वीं वर्षगांठ पर राजारहाट स्थित ममता के मन्दिर में अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला समिति की कोलकाता शाखा द्वारा ७१ विकलांगों को व्हील साईकिलें प्रदान की गईं। इस समारोह का उद्घाटन भागवत्-मर्मज्ञ पं. मालीरामजी शास्त्री ने किया। उन्होंने कहा कि नर सेवा को ही नारायण सेवा मानकर महिलाओं द्वारा किया जा रहा सेवा कार्य न सिर्फ प्रशंसनीय, बल्कि वंदनीय है। इस मौके पर पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया, डीपीएस स्कूल के संचालक श्री विजय अग्रवाल, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री संजय हरलालका, सर्वश्री विश्वनाथ सिंहानिया, प्राजेश रावत, रूचि मोहनका, सुरेश अग्रवाल, बासुदेव प्रसाद यादुका आदि ने भी अपने विचार रखे। कोलकाता शाखा की अध्यक्षा श्रीमती रेनू अग्रवाल ने स्वागत वक्तव्य दिया। सचिव श्रीमती विनीता अग्रवाल ने धन्यवाद दिया। संचालन निवर्तमान अध्यक्षा श्रीमती मंजू यादुका ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में कोषाध्यक्ष श्रीमती उमा झुनझुनवाला सहित सरोज भालोटिया, प्रज्ञा भुवलाका, वीणा सिंहानिया, मंजु झंवर, जयश्री अग्रवाल व अन्य सदस्याएँ सक्रिय थीं।

प्रान्तीय समाचार

राजनीति में सक्रिय भूमिका समय की मांग : ओंकारमल अग्रवाल

पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल एवं अन्य प्रादेशिक अधिकारियों – पूर्व प्रादेशिक अध्यक्ष श्री विजय कुमार मंगलूनिया, प्रादेशिक सहायक मंत्री श्री अशोक अग्रवाल, प्रादेशिक मुखपत्र 'सम्मेलन समाचार' के सम्पादक श्री राजकुमार झांझरी, ने अपने प्रादेशिक संगठनात्मक दौरे के दौरान प्रदेश के विभिन्न शाखाओं में बैठकें आयोजित कीं। इस क्रम में शिवसागर, मोरानहाट, डिब्रुगढ़, तिनसुकिया आदि स्थानों में सभाएँ आयोजित की गयीं।

२५ अप्रैल २०१२ को शिवसागर की सभा को सम्बोधित करते हुए प्रादेशिक अध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल ने मारवाड़ी समाज से, देशहित में, अपनी राजनीतिक सक्रियता बढ़ाने की अपील की। उन्होंने कहा कि समाज से जो लोग राजनीति में आए, उन्होंने जनहितकारी और निःस्वार्थ राजनीति की मिशाल पेश की है। उन्होंने दूषित हो रही राजनीतिक धारा को परिष्कृत कर उसे 'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय' बनाने के लिए समाज के सदस्यों का आह्वान किया। श्री सत्यनारायण दाधीच ने सभा की अध्यक्षता की एवं कार्यक्रम-संचालन श्री विजय कुमार चित्तावत ने किया।

मोरानहाट के सभा की अध्यक्षता श्री सत्यनारायण अग्रवाल ने एवं कार्यक्रम–संचालन श्री पवन मौर ने किया। सभा के प्रारंभ में श्री विनोद कुमार अग्रवाल ने सम्मेलन के उद्देश्यों की विस्तृत व्याख्या की। सभा में सर्वश्री आनंदीलाल अग्रवाल, ओंमप्रकाश गाड़ोदिया, विजय कुमार मौर, श्यामलाल मौर, कांता गाड़ोदिया, विमल अग्रवाल इत्यादि अनेक गणमान्य समाजसेवी उपस्थित थे।

डिब्रुगढ़ की सभा का विशेष आकर्षण था शाखा द्वारा जुटाये गये जनगणना के तथ्यों की पुस्तक का श्री ओंकारमल अग्रवाल के कर–कमलों से विमोचन। इस सभा की अध्यक्षता श्री विजय कुमार खेमानी एवं धन्यवाद–ज्ञापन प्रोफेसर महेश जैन ने किया।

तिनसुकिया में प्रादेशिक पदाधिकारियों के लिए स्वागत-सभा का आयोजन किया गया। सभा की अध्यक्षता श्री सत्यनारायण सारडा ने की और मंत्री श्री पवन कुमार केजड़ीवाल ने स्वागत–भाषण दिया। सभा को संबोधित करते हुए पूर्व प्रादेशिक अध्यक्ष श्री विजय कुमार मंगलूनिया ने पूर्वोत्तर में समाज के सदस्यों की उन्नति पर संतोष व्यक्त किया किन्तु नैतिकता, विशेषकर भ्रूण-हत्या, की स्थिति पर चिंता व्यक्ति की।

सभी सभाओं में प्रादेशिक अध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल ने समाज के सदस्यों के शंका/जिज्ञासाओं का निराकरण किया और सम्मेलन के कार्य–कलापों को गति देने के लिए युवकों की भूमिका पर बल दिया।

सूचनासार

रमेश गोयनका 'उत्तम कुमार लाईफ टाइम अचिवमेंट अवार्ड' से सम्मानित

राजस्थानी भाषा के गीत व संगीत की सेवा में रत सुप्रसिद्ध गायक, गीतकार व संगीतकार श्री रमेश गोयनका को उत्तम कुमार लाईफ टाइम अचिवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। गत २४ जुलाई को कोलकाता के ज्ञान मंच में फिल्म अभिनेत्री जून मालिया ने अवार्ड टालीवुड के कलाकारों की उपस्थिति में दिया। उल्लेखनीय है कि रमेश गोयनका गत ४० वर्षों से संगीत के क्षेत्र में अपना योगदान दे रहे हैं, इसी को ध्यान में रखकर बंगला चलचित्र प्रचार समिति ने चयन किया, समारोह में अन्य कलाकारों को भी सम्मानित किया गया।

प्रान्तीय समाचार

जीवन जीने की कला : सेवा, सत्संग व साधना

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन (छत्तीसगढ़ प्रान्त) एवं 'आर्ट आफ लिविंग' द्वारा रायपुर में बेसिक कोर्स के प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। छः दिन तक चले इस शिविर में १८ से ७० वर्ष तक के ५३ प्रतिभागी थे।

कोर्स में जीवन में सफलता, परेशानी से लड़ना, मानसिक एवं शारीरिक विकास, दोस्त बनाने की कला, आत्मविश्वास एवं सेवा भावना को मजबूत करने जैसे पहलू योगाभ्यास, श्वास–प्रणाली, ध्यान, सुदर्शन क्रिया, रोचक खेलों और पहेलियों के माध्यम से उजागर किए जाते हैं और उन पर मार्ग-दर्शन दिया जाता है। इसके अतिरिक्त यह कोर्स रक्तचाप, मुहमेह, हृदय–रोग, दमा, साइनस इत्यादि के रोगियों के लिए भी बहुत लाभदायक होता है।

शिविर के समापन के अवसर पर छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री रामानंद अग्रवाल ने संस्था के सामाजिक कार्यों पर प्रकाश डालते हुए ऐसे कार्यक्रम लगातार आयोजित करने पर बल दिया। प्रान्तीय महामंत्री श्री धनश्याम पोद्दार एवं प्रान्तीय सह–सचिव श्री सत्येन्द्र अग्रवाल सहित बड़ी संख्या में सम्मेलन के सदस्यों ने शिविर में सक्रिय भूमिका निभायी।

४४ विकलांगों को मिली नई जिंदगी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन (छत्तीसगढ़ प्रान्त), अखिल भारतीय विकलांग चेतना परिषद की छत्तीसगढ़ इकाई और महामाया चैरीटेबल फाउंडेशन द्वारा लालपुर में ४९वें निःशुल्क विकलांग शल्य शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन करते हुए राज्य के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री अमर अग्रवाल ने इस कदम की भूरि–भूरि प्रशंसा की तथा समाज के लोगों से विकलांगों की दिशा और दशा सुधारने के प्रति सजग रहने का आह्वान किया।

शिविर में राज्य के विभिन्न स्थानों से पैरों के कुल १२० विकलांग पंजीकृत थे जिनमें से ४४ का चयन शल्य क्रिया हेतु किया गया। इनमें एक वर्ष से लेकर ३० वर्ष की उम्र तक के व्यक्ति शामिल थे और कई के दोनों पैरों का ऑपरेशन भी किया गया।

छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री रामानंद अग्रवाल ने आभार व्यक्त करते हुए निःशक्त जनों की निस्वार्थ सेवा को सर्वोपरि बताया। प्रान्तीय अध्यक्ष श्री घनश्याम पोद्दार ने शिविर संयोजक की भूमिका बखूबी निभाई। शिविर के आयोजन में प्रान्तीय सह सचिव श्री सत्येन्द्र अग्रवाल सहित मारवाड़ी सम्मेलन के अनेक सेवाभावियों का सक्रिय योगदान रहा।

लघु कहानी

एकता की बलिहारी

एक गाँव में ४ भाई रहते थे, चारों का आपस में बड़ा प्रेम था। धीरे धीरे ये बड़े हुए, युवा अवस्था में कदम रखते ही जवानी के जोश और संगदोष में पड़कर सब भिन्न-भिन्न रास्तों पर चल पड़े कोई किसी की नहीं मानता। सबसे बड़ा भाई राजनीति में पड़कर नेतागिरी करने लगे। उससे छोटा भाई व्यापार व धंधे में लग गया। तीसरा भाई गुण्डा-बदमाश बन गया। सबसे छोटा भाई वृद्ध माता पिता की सेवा करता हुआ धर्म के मार्ग पर पदस्थ रहा। उसे चिंता हुई कि हमारा परिवार बिखर कर गलत राह पर चल पड़ा है, पिताजी की बात कोई सुनता नहीं, आखिर कोई उपाय करना चाहिये। उसने पिताजी से सलाह ली, पिताजी ने समझाया बेटे गाँव के प्रधान बड़े बुद्धिमान हैं, उनके पास जाओ, वे जरूर युक्ति बतायेंगे। वह प्रधान जी के घर गया सारा समाचार सुनाया। प्रधान जो कि विद्वान थे, उन्होंने उपाय बताया कि तुम्हारे भाई अलग अलग राहों में भटक गये हैं, उन्हें सही रास्ते पर लाने के लिए कठोर कदम उठाने पड़ेंगे अर्थात् उनका घमण्ड चूर करने के लिए हमें इनके सामने बड़ी शक्ति बनकर किसी और को भिजवाना होगा। वह बोला, मुझे मंजूर है, आप कुछ भी करो मगर इन्हें एकता में बाँधना ही है। प्रधान ने गाँव में चुनाव के दौरान अपना आदमी खड़ा करवा कर उसके बड़े भाई को हरवा दिया। इसी प्रकार दूसरे गांव से अच्छे व्यापारी को बुलाकर छोटे भाई का व्यापार ठप्प करा दिया। शहर से नामी गुण्डे बुलवा कर तीसरे भाई की गुण्डागर्दी खत्म करवा दी।

अब तीनों भाई बेसहारा, लाचार और कमजोर पड़ गये। निराश हो गये तब अपने पिताजी के पास गये। पिताजी ने सबको समझाया, “बेटे, सच्चाई, सफाई, ईमानदारी से अपना काम करो, तुम्हारा कभी बुरा न होगा, तुम आपस में एक हो जाओ। प्रेम में ऐसे बंध जाओ कि लोग कहें इनके यहाँ सचमुच स्वर्ग है। अंत में पिता के कहने पर चारों भाई पुनः एक साथ प्रेम से रहने लगे, परिणाम स्वरूप गाँव वालों ने सबसे बड़े भाई को गाँव का सरपंच चुन लिया। छोटे भाई की ईमानदारी से खुश होकर सारे व्यापारी उनसे व्यवसाय करने लगे, धंधा चलने लगा। तीसरा भाई जो जबरन लोगों को मार पीट कर डराने-धमकाने के बाद पैसा लिया करता था, वह लोगों की सेवा में जुट गया और कुछ दिनों में ही सच्चा समाज-सुधारक बन गया। लोग वैसे ही उसकी हर बात को मानने लगे। सबसे छोटा भाई तो मानो संत ही हो.... गाँव में इस परिवार की महिमा होने लगी ये सब एकता की ही बलिहारी है। एकता में बहुत बड़ी शक्ति है। इसलिए आज भी एकता सभी को अच्छी लगती है। ऐसा कौन है जिसे एकता अच्छी न लगे? फिर भी इस कहानी से शिक्षा ले यह संकल्प करें कि हम सब एकता के सूत्र में अवश्य बंधेंगे। वादा करें हम एक बनेंगे नेक बनेंगे।

– रामचरण यादव
सदर बाजार, बैतूल (म.प्र.)

प्रान्तीय समाचार

छत्तीसगढ़ मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा ध्वजारोहण

६६वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर छत्तीसगढ़ मारवाड़ी सम्मेलन की रायपुर शाखा द्वारा सरस्वती शिक्षा मन्दिर में ध्वजारोहण किया गया। सम्मेलन के पदाधिकारियों ने स्वतंत्रता दिवस के महत्व पर बच्चों का उद्बोधन किया। इसके पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गए। साथ ही बच्चों के बीच मिठाई एवं नमकीन के एक हज़ार पैकेटों का भी वितरण किया गया। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ मारवाड़ी सम्मेलन के कार्यकारी प्रादेशिक अध्यक्ष डॉ. अरुण हरितवाल, प्रदेश कोषाध्यक्ष श्री कपिल अग्रवाल, रायपुर शाखा अध्यक्ष श्री पवन अग्रवाल, सचिव श्री नवल तिवारी, सर्वश्री सुशील लोसलका, विनोद अग्रवाल, पवन अग्रवाल एवं निखिल तिवारी उपस्थित थे।

Comprehensive and Exclusive

Business Economics

... Truly reflecting global aspirations!

Subscribe

100% Bargain

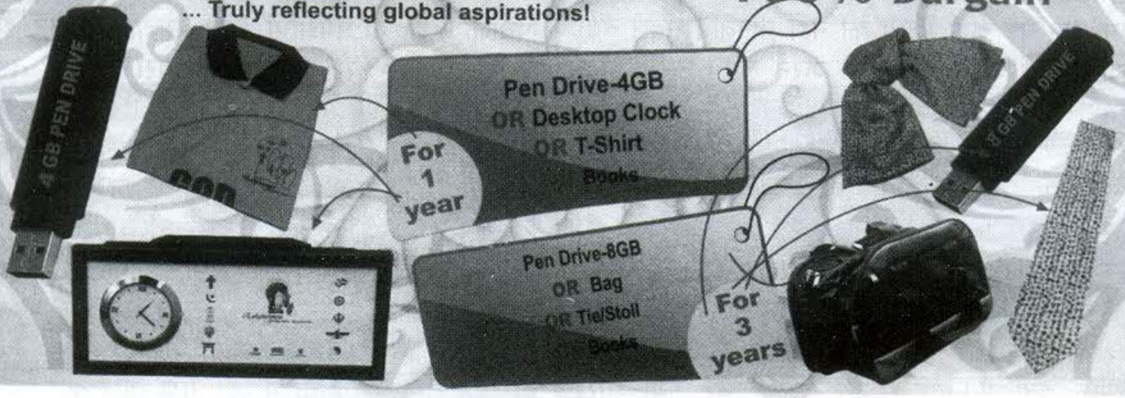

Subscribe Business Economics :

Subscribers may send choice of books valued equal to subscription

Tick	Term	No. of Issues	Price you pay	Gift Value	Saving	US $	UK £	Gift Option
☐	3 Years	72	1440/-	1440/-	1440/-	216	144	☐ 8GB Pen Drive OR ☐ Bag OR ☐ Tie/Stoll OR ☐ Books
☐	1 Year	24	480/-	480/-	480/-	72	48	☐ 4GB Pen Drive OR ☐ Desktop Clock OR ☐ T-Shirt OR ☐ Books
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 150)	240/-	150/-	390/-	-	-	☐ Exclusively for Students/Institutions
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 150)	240/-	150/-	390/-	-	-	☐ EXCLUSIVELY FOR SENIOR CITIZENS

For 1 year Book of choice upto ₹ 480 | **For 3 years Books of choice upto ₹ 1440**

Business Economics

Subscription Form

Name : Mr./Ms. ______

Address : ______

______ City/District : ______

State : ______ Country : ______ Pin Code : ☐☐☐☐☐☐

E-mail : ______ Mobile : ______ Landline : ______ (STD CODE)

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No. ______ dated: ______ for Rs. ______ drawn on: ______

In favour of **CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED**

Signature: ______ date: ______

Mail this subscription form along with your Cheque / DD to : Pramod Kr. Singh, General Manager, **Business Economics**, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022, India
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact : Kolkata : Shaonli Majumder : 033 2223-0368 • **Mumbai :** Rajendra Singh : 90290 84951
New Delhi : Lala P. Yadav : 98102 10095 • **Kohima :** Povotso Lohe : 94360 05889

Lucky DRAW

QUARTERLY LUCKY DRAW FOR THE SUBSCRIBERS :
1st Prize : INR 2000/- ● 2nd Prize : INR 1000/- ● 3rd Prize : INR 500/-

दुनियादारी

घर जाने की तैयारी कर
अब मौत से भी यारी कर
नगद नहीं मिलती है खुशियाँ
थोड़ी बहुत तो उधारी कर
मरना है सबको सस्ते में
काम कुछ तो सरकारी कर
अब संदेशा हरित क्रांति का
जल्दी से मित्र तू जारी कर
निर्णय की तारीख नजदीक है
तनिक न अब मक्कारी कर
जो मिलता है मिलकर रहेगा
व्यर्थ में मत मगजमारी कर
रहती सबकी इच्छाएँ अधूरी
साधना तपस्वी सी भारी कर
नारी नही है द्वार नरक का
पर जबरन ना दो दो नारी कर
मन उलझाया दुनियादारी में
अब यादव कुछ होशियारी कर

– **रामचरण यादव, याददाश्त**
प्रधान संपादक, नाजनीन
सदर बाजार, बैतूल (म.प्र.)

बाधाएँ हमें तब ही दिखती हैं जब हमारी निगाहें लक्ष्य से हट जाती हैं।

– हेनरी फोर्ड
अमेरिकी राष्ट्रपति

गजलें

(१)

तू तो निकला है, बेवफा मोहन
फिर भी दूँगी तुझे दुआ मोहन
नींद मेरी हराम की पहले
आज भूला है क्या हुआ मोहन
जितना तूने मुझे नहीं चाहा
मैंने चाहा सौ गुना मोहन
धूप पहले विरह की सहली तो
आज बदली सा छा गया मोहन
तूने इतना सता लिया मुझको
और कितनी है अब सजा मोहन
लाख तूने जफाएँ की मुझसे
फिर भी दूँगी न बद्दुआ मोहन

(२)

वो मुझको यूं छोड़ रहा है
जैसे रिश्ता तोड़ रहा है
एक जान दो जिस्म रहे हैं
हमें देख मुँह मोड़ रहा है
निश्चित फसलें अच्छी होंगी
उचित समय पर गोड़ रहा है
गुप्त रहस्य खुलेंगे सारे
साथी भाँडा फोड़ रहा है
उड़ना जिसे सिखाया मैंने
वो मुझसे ले होड़ रहा है
तेल भला कैसे निकलेगा
सूखी रेत निचोड़ रहा है।

- **मोहन लोधिया, विद्या वाचस्पति**
१३५/१३६ मोहन निकेत, अवधपुरी कॉलोनी
नर्मदा रोड, जबलपुर - ४८२००८

With Best Compliments From :-

M/s ROAD CARGO MOVERS (P) LTD.

1, GIBSON LANE, 2ND FLOOR, SUIT NO :- 211
KOLKATA -700 069

Tele No.	:	*2210-3480, 2210-3485*
Fax No.	:	*2231-9221*
e-mail	:	*roadcargo@vsnl.net*

BRANCHES & ASSOCIATES AT

DURGAPUR, HALDIA, CHENNAI, HYDERABAD, BANGALORE, ICHAPURAM, BHIVANDI, COCHI, MUMBAI, VIJAYWADA, COIMBATORE, GAZIABAD, PONDICHERRY, VISAKHAPATNAM

☺ SMS की दुनिया ☺

देश आजाद है, परन्तु गरीबी,
महंगाई, भ्रष्टाचार, जाति और धर्म
के वोट–बैंक की खिलाफ जीत ही
देश का स्वर्णिम भविष्य है।

★ ★ ★

हर महफिल भी रोएगी, हर दिल भी रोएगा,
जहां डुबेगी मेरी किश्ती, वह साहिल भी रोएगा,
इतना प्यार बिखर देंगे जमाने में हम,
कत्ल करके मेरा कातिल भी रोएगा।

★ ★ ★

German soldior: Sir, We are surrounded
by enemies on all sides.
Hitler: Excellent! Now we can attack
in any direction. Attitude decides life.

★ ★ ★

कुछ इस तरह से मैने जिन्दगी को आसान बना लिया,
कुछ से मांग ली माफी और कुछ को माफ कर दिया।

★ ★ ★

६५ साल से स्वतंत्र है पर आजाद हमारा वतन नहीं,
अन्नाजी–रामदेव के, इंकिलाब में दम नहीं,
भ्रष्ट्राचारी संसद में बैठे जिनकी आँखें में शर्म नहीं,
आतंकवादी हमारी जेल में, नवाब से कम नहीं,
इस देश के भ्रष्ट नेता भी, कसाब से कम नहीं।

★ ★ ★

शिक्षक – नरेन्द्र मोदी
हमारे देश के प्रधानमंत्री होते तो क्या होता?
सन्ता – औरों का पता नहीं, मगर पाकिस्तान जरूर
हमसे काश्मीर की बजाय लाहौर के लिए
लड़ रहा होता।

★ ★ ★

कुछ रिश्ते ऐसे होते हैं,
जिनमें इन्सान अच्छा लगता है,
और कुछ इन्सान ऐसे होते हैं,
जिनसे रिश्ता अच्छा लगता है।

★ ★ ★

३१	राज्य
१६१८	भाषाएँ
६४००	जातियाँ
६	धर्म
२८	मुख्य त्योहार
	एवं
१	भारत
	जयहिन्द!

काश मेरी भी एक बेटी होती!

सुबह से ही घर में चहल-पहल थी। संगीत की मधुर ध्वनि बज रही थी। पर बूढ़े रामनाथ के प्राण तो तरह-तरह के पकवानों के भीनी-भीनी खुशबू में ही अटके थे। पर डाक्टर बेटे के इस आलीशान फ्लैट में जो स्टोररूमनुमा कमरा उन्हें दिया गया था आज कोई भूले भटके भी इस तरफ ना आता था। अब किसे पूछे कि किस खुशी में आज ये उत्सव है, क्या कोई पूजा है आज? पर इस कमरे में तो कोई कैलेन्डर भी नहीं। आज तो पोते भी इस तरफ नहीं आ रहे। किससे पूछे... कि तभी गाजर के हलवे की मीठी खुशबू मन को तर कर गई। ओह! काश! उसे कोई एक प्लेट दे जाता। बेटे के आते-आते रात के दस बज जाऐंगे। तभी सबको उनकी याद आएगी। दिखावे की याद! तब बहू और पोते भी आसपास मंडाराऐंगे। उनके बिस्तर के पास एक छोटी खिड़की से अब भी उजाला आ रहा है यानि रात होने में काफी देर है। तब तक इंतजार! ऐसा तो नहीं कि उन्होंने भोजन नहीं किया पर डाक्टर बेटे के सख्त आदेश के अनुसार उन्हें जो सादा भोजन लेना पड़ता उससे तो जीभ में छाले पड़ गए। बहू से कुछ मांगते तो लाचारी जताती पर रामनाथ ताड़ जाते कि नौटंकी कर रही है। सादे भोजन को भी स्वादिष्ट बनाया जा सकता है। वो अपने वृद्ध माता-पिता के लिए बनाती भी थी। ये खबर उन्हें नौकरानी के द्वारा मिला था। उनके ही बेटे के पैसे से उन्हें वंचित करके .... कि तभी एक आहट ने उन्हें चौकन्ना कर दिया। नौकरानी झाड़ू लगाने आई थी। पूछे – "आज घर में क्या कोई उत्सव है?"

"हाँ, बहूरानी के पापा का जन्मदिन।" तीर खाए शिकार की तरह वे गिर पड़े। अपने पत्नी के कोख में चार कन्या-भ्रूण हत्याओं का आरोप था उनपर। सहसा बुदबुदाए – 'काश मेरी भी एक बेटी होती!'

– शुक्ला चौधरी
संचालिका – कोलकाता दूरदर्शन

आजादी के लुटेरे कौन?

(यह अग्रलेख १५ अगस्त १९८३ को छपा था। इधर २९ वर्षों में इस 'लूट' में कितने लुटेरे और शामिल हो गये हैं, यह आप खुद देख लीजिए)

१५ अगस्त १९४७!

जिस दिन भारत के लाखों नागरिकों के त्याग-बलिदान और हजारों शहीदों के खून से सिंचित हमारा आजादी का बिरुआ लगा!

देखते देखते ३६ वर्ष बीत गये।

देश पर मर-मिटने की वे तमन्नाएँ कहाँ गयीं?

आदर्शों के लिए तिल-तिल तपने का वह संकल्प कहाँ हवा हो गया?

भूखे पेट रहकर भी देश का गौरव बढ़ाने के वे हौसले कहाँ पस्त हो गये?

इम्पोर्टेड के दीवानों को आज कैसे विश्वास दिलाया जाये कि इसी देश के चौराहों पर विदेशी कपड़ों की होली जलायी जाती थी!

इंग्लिश मीडियम के हिमायतियों को आज कौन समझाये कि कभी यह घोर राष्ट्रीय अपमान माना जाता था।

देखते-देखते सब कुछ बदल गया, और बदल रहा है!

बापू का हर आँख के आँसू पोंछने का सपना सिर्फ भाषणों और मौखिक आश्वासनों में रह गया।

आत्म-निरीक्षण करें, तो पायेंगे कि कहीं जड़ में ही भूल हुई है जिससे कि दीन-हीन आम आदमी अपने को हर जगह बेबस, अकेला, अपमानित और असहाय अनुभव कर रहा है, उसकी आजादी कहीं बीच में ही अटककर रह गयी है।

तब इस 'आजादी' को लूटनेवाले कौन हैं?

- सबसे पहले वे नेता, जिन्होंने संघर्ष से थककर (या सत्ता के मोह में) देश का विभाजन स्वीकार किया और जनता को आजादी का पूरा मूल्य चुकाने का मौका नहीं दिया।
- सत्ता सम्भालने के बाद, विभाजन के खूनी परिणाम व लाखों नागरिकों की दर्दनाक हालत देखकर भी जिन्होंने विभाजन के व्यवहारिक पहलू को लगातार नजरअंदाज किया।
- सार्वभौम एकता व प्रेम के मायावी आकर्षण में दुनिया की फिकर करते रहे और अपने घर से बेखबर बने रहे।
- अंग्रेजों की 'बांटो और राज करो' की कूटनीति को चालू रखा एवं अल्पसंख्यकों को पुचकार-पुचकार कर चुनाव और वोट का मोहरा बनाये रखा।
- जो अरबो-खरबों की पंचवर्षीय योजनाएँ बनाते रहे, लेकिन बुनियादी बातों को भूलकर देश को राष्ट्रीय चरित्र एवं स्वाभिमान से शून्य कर दिया।
- एक बार सत्ता से चिपककर जिन्होंने मरते दम तक उससे हटने का नाम नहीं लिया और जो सत्ता को सेवा की बजाय हमेशा बपौती मानकर चलते रहे।
- वे स्वार्थी और लू-लू मंत्री, जिनकी अकुशलता ने लगातार भ्रष्ट नौकरशाही को बढ़ावा दिया।
- जिन्होंने न्याय को इतना जटिल और महंगा बनाया कि आज पैसे या प्रभाव के बल पर डाकू-हत्यारे व सफेदपोश लुटेरे मजा ही नहीं कर रहे, बल्कि 'सामाजिक प्रतिष्ठा' पा रहे हैं और असहाय व गरीब नागरिक आँसू पीकर जीने को मजबूर है। उसकी कहीं कोई सुनवाई नहीं।
- उद्योग-व्यापार के वे तत्व, जो करचोरी, तस्करी, कालाबाजारी, जमाखोरी और मुनाफाखोरी के लिए देश का बड़े से बड़ा अहित करने से भी नहीं चूकते।
- वे पेशेवर 'यूनियन लीडर' जो अपने संगठन, आतंक या दवाब से सामान्य कामगार को विवेकशून्य व निकम्मा बनाकर अपना घर भरने या लीडरी कायम रखने का 'टूल' बनाये हुए हैं।
- जनता पार्टी के वे शासक, जिनकी नालायकी व आपाधापी ने लोगों के मन में परिवर्तन या सुधार की रही-सही उम्मीद पर भी पानी फेर दिया।
- और इन सबसे ज्यादा जिम्मेदार हम खुद हैं कि हमारी आजादी की लूट मची हुई है और हम हाथ पर हाथ रखे बैठे त्राण के लिए किसी अवतार की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

परिस्थिति बड़ी विकट है, पर निराश होने की आवश्यकता नहीं। आज 'चोर-बेईमान-लुटेरा' हर कदम पर संगठित है। 'भला' व 'ईमानदार' हर जगह 'अकेला' है। हमें इस 'अकेलेपन' को छोड़ना है और जहाँ कहीं भी अन्याय, भ्रष्ट्राचार, अनियमितता आदि दिखाई पड़े, उसके खिलाफ संगठित होना है — फिर चाहे वह हमारा मुहल्ला हो, नगर हो, पार्टी हो, सरकार, समाज या कोई प्रतिष्ठान हो — हमारा समवेत स्वर और प्रयास ही हमारा उद्धार करेगा।

- **सत्यनारायण मिश्र** (जीवन प्रभात)

viom
NETWORKS

A Leading Telecom Infrastructure Company Globally

Independent entity with over 38,000 towers and over 89000 tenants

Plans to roll-out nearly 20-25,000 additional towers and take tenancy ratio to 2.5x

Strongest player in neutral host Shared In-Building Solutions (IBS)

First Indian Telecom Infrastructure Company to receive ISO 14001 & OHSAS 18001 Certification

Viom Networks Limited
Corporate Office : 14 & 15th Floor, DLF Square, Jacaranda Marg, DLF City, Phase 2, Gurgaon - 122 002. India

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2010-2012
Date of Publication - 28 August, 2012
RNI Regd. No. 2868/68

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : aimf1935@gmail.com